بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक

बदर

क़ादियान

Weekly Badar Qadian

HINDI

अल्लाह तआला का आदेश

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اسۡتَجِیۡبُوۡا لِلّٰہِ وَلِلرَّسُوۡلِ اِذَا دَعَاکُمۡ لِمَا یُحۡیِیۡکُمۡ ۚ وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰہَ یَحُوۡلُ بَیۡنَ الۡمَرۡءِ وَقَلۡبِہٖ وَاَنَّہٗۤ اِلَیۡہِ تُحۡشَرُوۡنَ ﴿۲۵﴾

(سورۃ الانفال آیت:25)

अनुवाद : ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह और रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहा करो, जब वह तुम्हें बुलाए, ताकि वह तुम्हें ज़िंदा करे और जान लो कि अल्लाह इंसान और उसके दिल के बीच आड़ बन जाता है और यह भी (जान लो) कि तुम उसी की ओर इकट्ठे किए जाओगे।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद | वर्ष- 11 | अंक -40 | 19 रबीउल सानी 1448 हिज्री कमरी, 1 ईख़ा 1405 हिज्री शम्सी, 01 अक्टूबर 2026 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ सुनना ही असली ज़िंदगी है।

عَنۡ أَبِي سَعِيدِ بۡنِ الۡمُعَلَّى رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ قَالَ: كُنۡتُ أُصَلِّي، فَمَرَّ بِي رَسُولُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ فَدَعَانِي، فَلَمۡ آتِهِ حَتَّى صَلَّيۡتُ، ثُمَّ أَتَيۡتُهُ فَقَالَ: "مَا مَنَعَكَ أَنۡ تَأۡتِيَ؟ أَلَمۡ يَقُلِ اللّٰہُ: يٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ آمَنُوا اسۡتَجِیۡبُوۡا لِلّٰہِ وَلِلرَّسُوۡلِ إِذَا دَعَاكُمۡ (سورۃ الأنفال آیۃ:۲۵)"، ثُمَّ قَالَ: "لَأُعَلِّمَنَّكَ أَعۡظَمَ سُورَةٍ فِي الۡقُرۡآنِ قَبۡلَ أَنۡ أَخۡرُجَ". فَذَهَبَ رَسُولُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ لِيَخۡرُجَ فَذَكَرۡتُ لَهُ، وَقَالَ مُعَاذٌ: حَدَّثَنَا شُعۡبَةُ، عَنۡ خُبَيۡبِ بۡنِ عَبۡدِ الرَّحۡمٰنِ، سَمِعَ حَفۡصًا، سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ رَجُلًا مِنۡ أَصۡحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ بِهٰذَا، وَقَالَ: هِيَ "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ (الفاتحۃ:۲) السَّبۡعُ الۡمَثَانِي". [صحیح البخاری/ کتاب تفسیر القرآن/حدیث: ۴۶۴۷]

हज़रत अबू सईद बिन मुअल्ला रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे पुकारा। मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में नहीं पहुँच सका, बल्कि नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि आने में देर क्यों हुई? क्या अल्लाह तआला ने तुम्हें यह हुक्म नहीं दिया है: «یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ آمَنُوا اسۡتَجِیۡبُوۡا لِلّٰہِ وَلِلرَّسُوۡلِ اِذَا دَعَاکُمۡ»

कि "ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहो, जबकि वह (अर्थात् रसूल) तुम्हें बुलाएँ।"

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मस्जिद से निकलने से पहले मैं तुम्हें क़ुरआन की सबसे महान सूरह सिखाऊँगा। थोड़ी देर बाद जब आप बाहर तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैंने आपको याद दिलाया। और मुआज़ बिन मुआज़ अंबरी ने इस हदीस को इस तरह रिवायत किया कि हमसे शोबा ने बयान किया, उनसे खुबैब ने, उन्होंने हफ़्स से सुना और उन्होंने अबू सईद बिन मुअल्ला रज़ियल्लाहु अन्हु से सुना, जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी थे। उन्होंने बयान किया कि वह (सूरह फ़ातिहा) (اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ) है, जिसमें सात आयतें हैं, जो हर नमाज़ में बार-बार पढ़ी जाती हैं।

व्याख्या: «یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ آمَنُوا اسۡتَجِیۡبُوۡا لِلّٰہِ وَلِلرَّسُوۡلِ اِذَا دَعَاکُمۡ» : इस आयत में لِمَا یُحۡیِیۡکُمۡ के अर्थ हैं: "उस बात की ओर जो तुम्हारी सुधार करे।" इह्या का अर्थ सुधार है। अल्लाह और रसूल की बात मानो, क्योंकि वे उन बातों की राहनुमाई करते हैं जिनसे तुम्हारा सुधार होगा। तफ़्सीर सूरह आले इमरान, बाब 12 में भी यह विषय बयान हुआ है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान और प्रभावशाली चमत्कार

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

"इसी तरह दूसरा मौजिज़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चाँद का दो टुकड़े होना है, जो इसी इलाही ताक़त से ज़ाहिर हुआ था। इसके साथ कोई दुआ शामिल नहीं थी, क्योंकि वह केवल उंगली के इशारे से, जो इलाही ताक़त से भरी हुई थी, घटित हो गया था। और इस प्रकार के और भी बहुत से मौजिज़े हैं जो केवल व्यक्तिगत अधिकार के रूप में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिखाए, जिनके साथ कोई दुआ नहीं थी।

कई बार थोड़े से पानी को, जो केवल एक प्याले में था, अपनी उंगलियाँ उस पानी के अंदर डालने से इतना बढ़ा दिया कि पूरे लश्कर और ऊंटों और घोड़ों ने वह पानी पिया और फिर भी वह पानी उसी मात्रा में मौजूद था। और कई बार दो-चार रोटियों पर हाथ रखने से हजारों भूखे-प्यासों को उनसे पेट भर दिया। और कभी-कभी थोड़े से दूध को अपने होंठों से बरकत देकर एक पूरी जमाअत का पेट उससे भर दिया। और कभी-कभी खारे पानी वाले कुएँ में अपने मुँह का लार डालकर उसे बहुत मीठा कर दिया। और कभी-कभी बहुत घायल लोगों पर अपना हाथ रखकर उन्हें ठीक कर दिया। और कभी-कभी उन आँखों को, जिनकी पुतलियाँ लड़ाई के किसी सदमे से बाहर निकल गई थीं, अपने हाथ की बरकत से फिर ठीक कर दिया।

इसी तरह और भी बहुत से काम अपने व्यक्तिगत अधिकार से किए, जिनके साथ एक छिपी हुई इलाही ताक़त मिली हुई थी।"

(आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 5, पृष्ठ 65-66)

تفسیر کبیر

मृतकों को जीवित करने से मतलब ऐसे बीमारों को, जो मुर्दों की तरह हों, उन्हें ज़िंदा करना है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आयत کَذٰلِکَ یُحۡیِ اللّٰہُ الۡمَوۡتٰی की तफ़्सीर में इह्या-ए-मौता की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं:

کَذٰلِکَ یُحۡیِ اللّٰہُ الۡمَوۡتٰی में इह्या-ए-मौता से मतलब:

کَذٰلِکَ یُحۡیِ اللّٰہُ الۡمَوۡتٰی के दो अर्थ हैं—पहला यह कि इस तरह अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िंदा करता है, अर्थात् वास्तविक मुर्दों को ज़िंदा करके इस दुनिया में वापस लाता है। ये अर्थ इस जगह नहीं लिए जा सकते, क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ की दूसरी आयतें इन अर्थों के विरुद्ध हैं और उनसे साबित होता है कि वास्तविक मुर्दे इस दुनिया से वापस नहीं आ सकते।

एक अर्थ इस आयत के यह भी हो सकते हैं कि जो मुर्दों की तरह हों, उन्हें ज़िंदा कर देना। ये अर्थ आम बोलचाल के अनुसार हैं। कभी-कभी एक चीज़ दूसरी चीज़ से इतनी मिलती-जुलती हो जाती है कि उसका नाम उसे मिल जाता है। चुनाँचे आम बोलचाल में जब किसी व्यक्ति को कोई सख़्त चोट लगती है तो वह अपने दर्द और तकलीफ़ का इज़हार करते हुए कहता है, "हाय! मैं मर गया।" इसका मतलब यह होता है कि मैं मुर्दों की तरह हो गया।

इसलिए आयत के ये अर्थ भी हो सकते हैं कि जो मुर्दों की तरह हों, अल्लाह तआला उन्हें ज़िंदा कर देता है, अर्थात् जिनके बचने की कोई उम्मीद बाकी नहीं रहती और दुनियावी ज्ञान उनकी मौत का फ़ैसला सुना देते हैं, ख़ुदा तआला उन्हें अपने फ़ज़्ल से बचा लेता है।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 2, पृष्ठ 188, ऑनलाइन संस्करण)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़्ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुलासा उद्घाटन संबोधन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जलसा सालाना ब्रिटेन 2026 के अवसर पर

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने बसीरत अफ़रोज़ ख़िताब से जमाअत अहमदिया ब्रिटेन के 60वें जलसा सालाना का उद्घाटन फ़रमाया।

तशह्हुद, तअव्वुज़ और सूरः अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे के उद्देश्यों को बयान करते हुए फ़रमाया कि

"हम यह जलसा इसलिए आयोजित कर रहे हैं ताकि हमारे अंदर अल्लाह तआला का डर पैदा हो और ज़ुहृद और तक़्वा और ख़ुदा-तरसी और परहेज़गारी और नरम-दिली और आपस में मुहब्बत व भाईचारे में एक-दूसरे के लिए नमूना बन जाएँ।"

अतः इसी उद्देश्य के लिए इन जलसों का आयोजन होता है और इसी उद्देश्य के लिए आज आप लोग यहाँ जमा हुए हैं।

यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि अगर हम इस उद्देश्य को पाने के लिए अपनी पूरी कोशिश नहीं करेंगे तो हमारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आना भी बे-मक़सद है और इन जलसों में आना भी बे-मक़सद है।

हमें याद रखना चाहिए कि "इस्लाम की शिक्षा की जड़ तक़्वा है। अगर तक़्वा है तो इंसान अल्लाह तआला की बताई हुई शिक्षा पर अमल कर सकता है, वरना दीन पर अमल करने का हमारा नारा सिर्फ़ एक नारा रह जाएगा।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बुनियादी उद्देश्य को अपने एक शेर में यूँ बयान फ़रमाया है कि

हर एक नेकी की जड़ यह इत्तिक़ा है
अगर यह जड़ रही सब कुछ रहा है

यह दूसरा मिसरा अल्लाह तआला ने आपको अल्हाम फ़रमाया था। अतः तक़्वा ही असल जड़ है। जब तक यह हममें रहेगी, हम अपने उद्देश्य में भी कामयाब होते रहेंगे। क़ुरआन करीम और शरीअत पर पूर्ण ईमान लाने के लिए तक़्वा ज़रूरी है, इबादतें अदा करने के लिए तक़्वा ज़रूरी है, घरेलू मामलों में अच्छा व्यवहार करने के लिए तक़्वा ज़रूरी है।

इस्लाम में सबसे अधिक सम्मानित वह व्यक्ति है जो मुत्तक़ी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह मुत्तक़ियों का दोस्त और मददगार है। वह मुत्तक़ी से मुहब्बत करता है और बेहतरीन अंजाम मुत्तक़ियों का होगा।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञापालन के लिए भी तक़्वा को ज़रूरी क़रार दिया गया है।

हम चाहे जितने भी अहद करते रहें, नारे लगाते रहें कि हम जमाअत से जुड़े हुए हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आ गए हैं, हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पूर्ण ईमान रखते हैं और अल्लाह तआला पर पूर्ण ईमान और यक़ीन रखते हैं। लेकिन अगर हमारे अंदर तक़्वा नहीं है तो ये नारे सिर्फ़ नारे ही हैं।

अल्लाह तआला ने फलाह और कामयाबी के लिए तक़्वा को शर्त क़रार दिया है।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में अनगिनत स्थानों पर तक़्वा की अहमियत को स्पष्ट फ़रमाया है। अल्लाह तआला ने यह नसीहत फ़रमाई है कि तुम तक़्वा में बढ़ने की कोशिश करो। अगर तुम तक़्वा में आगे बढ़ोगे तो ईमान में और क़ुर्ब-ए-इलाही प्राप्त करने में भी आगे बढ़ोगे। अगर हमने कामयाबियाँ हासिल करनी हैं, अपनी इस्लाह करनी है, अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल करना है तो इसके लिए हमें मुत्तक़ी बनना होगा।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम के आरंभ में ही फ़रमा दिया है कि यह ऐसी किताब है कि जिसके अल्लाह तआला की ओर से नाज़िल होने में कोई शक नहीं है। मुत्तक़ियों के लिए हिदायत है।

अर्थात अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़रमा दिया है कि तुम अल्लाह तआला की किताब से, उसके संदेश से, उसकी शरीअत से तभी फ़ायदा उठा सकते हो जब तुम्हारे अंदर तक़्वा हो।

अतः इस बात को हमेशा अपने सामने रखना चाहिए कि तक़्वा के बिना इस्लाम में इंसान का कोई स्थान नहीं। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ ने तो अपने नुज़ूल की अंतिम वजह यही क़रार दी है कि तक़्वा की राहों को सिखाए।

अल्लाह तआला ने एक और अवसर पर क़ुरआन करीम में फ़रमाया है कि मोमिनों के लिए तो अल्लाह तआला ने इस क़ुरआन में शिफ़ा और रहमत रखी है, मगर ज़ालिमों को यह केवल घाटे में बढ़ाता है। जिनमें तक़्वा नहीं, उन्हें क़ुरआन करीम कोई राह नहीं दिखा सकेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "हमारी शरीअत और क़ुरआन करीम में यही हुक्म है कि ग़ज़-ए-नज़र से काम लो और निगाहें नीची रखो। अगर लोग इस पर अमल करने लग जाएँ और तक़्वा की यह हालत पैदा हो जाए तो इंसान बहुत सारे गुनाहों से बच सकता है।"

आजकल के समाज में यही वे गुनाह हैं जो दुनिया को तबाही की ओर ले जा रहे हैं। फ़रमाया, औरतों के हुस्न के क़िस्से मत सुनो और उन कामों से परहेज़ करो जिनसे तुम्हें ठोकर लग सकती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि नजात बिना नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी हिदायात, नमाज़ वग़ैरह अदा करने के नहीं मिल सकती।

कुछ लोग यह सवाल करते हैं कि दूसरे धर्मों के लोग भी दावा करते हैं कि वे सच्चे हैं। मगर हक़ीक़त यह है कि इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अलावा किसी भी दूसरे धर्म का यह दावा नहीं है कि वह सारी दुनिया के लिए आया है।

इंसान का काम है कि माँगने से रुके नहीं और ख़ुदा तआला की मुहब्बत के लिए उसी से माँगते चले जाना चाहिए। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इसी लिए ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है कि मुत्तक़ी वे हैं जो नमाज़ क़ायम करते हैं और क़ायम वही चीज़ की जाती है जो गिरने के लिए तैयार हो। इंसानी कोशिशें बिना ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल के बेकार हैं। इसलिए उस रहीम व करीम ने फ़रमाया कि जहाँ तक संभव हो वे तक़्वा की राह से नमाज़ क़ायम करने में कोशिश करें। फिर अगर वे मेरे कलाम पर ईमान लाते हैं तो मैं उन्हें उनकी कोशिश और प्रयास पर नहीं छोड़ूँगा बल्कि मैं स्वयं उनकी मदद करूँगा। तब उनकी नमाज़ एक और रंग पकड़ लेगी और उसमें एक और कैफ़ियत पैदा हो जाएगी जो उनके ख़याल और गुमान में भी नहीं थी।

फिर ऐसी ही माली इबादत भी है। जिस क़दर इंसान कर सकता है वह सिर्फ़ यह है कि अपने पसंदीदा माल में से कुछ ख़ुदा के लिए दे दे। इसी लिए ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि ये वे हैं जो उसमें से ख़र्च करते हैं जो हमने उन्हें दिया है।

फ़रमाया कि जो कुछ इंसान को हर एक प्रकार की नेमत, जैसे उसकी जान और सेहत और ज्ञान और ताक़त और माल आदि में से दिया गया है, उसकी निस्बत इंसान अपनी कोशिश से सिर्फ़ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ तक अपना इख़लास ज़ाहिर कर सकता है और इससे बढ़कर इंसानी ताक़तें सामर्थ्य नहीं रखतीं।

फ़रमाया: यह एहसास कि यह मेरी चीज़ है, यह भी एक बीमारी है। अगर तुम हर चीज़ को अल्लाह तआला की चीज़ समझोगे तो यह तक़्वा है।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि नमाज़ को ख़ूब सँवार-सँवार कर पढ़ना चाहिए क्योंकि

"नमाज़ सारी तरक़्क़ियों की जड़ और ज़ीना है। इसलिए कहा गया है कि नमाज़ मोमिन की मेराज है।" इस दीन में हज़ारों-लाखों औलिया अल्लाह, रास्तबाज़, अबदाल और क़ुतुब गुज़रे हैं। उन्होंने ये दर्जे और मरातिब किस तरह हासिल किए? इसी नमाज़ के ज़रिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ को समझने और उसके अनुसार हिदायत पाने के लिए तक़्वा ज़रूरी है। फिर आप अलैहिस्सलाम ने हमें नसीहत करते हुए फ़रमाया कि जब तक इंसान अपने बुरे अख़लाक़ को नहीं छोड़ता, उस समय तक वह उन अख़लाक़ के मुक़ाबले में जो अच्छे अख़लाक़ हैं, उन्हें स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि दो विरोधी चीज़ें एक दिल में जमा नहीं हो सकतीं। असल चीज़ यह है कि इंसान तक़्वा हासिल करने की कोशिश करे। आप अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी से प्यार करता है।

ख़ुदा तआला की महानता को याद करके बहुत डरते रहो और याद रखो कि सब अल्लाह के बंदे हैं। किसी पर ज़ुल्म न करो, न किसी को तुच्छ समझकर देखो। जमाअत में अगर एक आदमी गंदा होता है तो वह सबको गंदा कर देता है।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"हमेशा देखना चाहिए कि हमने तक़्वा और पवित्रता में कहाँ तक तरक़्क़ी की है। इसका मापदंड क़ुरआन है। अल्लाह तआला ने मुत्तक़ी की निशानियों में एक यह भी निशान रखा है कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी को दुनिया की अप्रिय चीज़ों से आज़ाद करके उसके कामों का ख़ुद ज़िम्मेदार हो जाता है।"

जैसा कि फ़रमाया, जो व्यक्ति ख़ुदा तआला से डरता है, अल्लाह तआला हर एक मुसीबत में उसके लिए निकलने का रास्ता निकाल देता है और उसके लिए ऐसी रोज़ी के सामान पैदा कर देता है कि उसके गुमान में भी नहीं होता।

फ़रमाया: यह न समझो कि अल्लाह तआला कमज़ोर है, वह बड़ी ताक़तों वाला है। जब किसी मामले में उस पर भरोसा करोगे तो वह ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा। जो अल्लाह तआला पर भरोसा करता है तो वह उसके लिए काफ़ी हो जाता है।

एक जगह आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: सबको ध्यान लगाकर सुनना चाहिए, पूरे ग़ौर और फ़िक्र के साथ सुनो, क्योंकि यह मामला ईमान का है। इसमें सुस्ती, ग़फ़लत और ध्यान न देना बहुत बुरे नतीजे पैदा करता है। जो लोग ईमान के मामले में ग़फ़लत से काम लेते हैं और जब उन्हें संबोधित करके कुछ बयान किया जाए तो उसे ध्यान से नहीं सुनते, तो उन्हें बोलने वाले के बयान से, चाहे वह कितना ही उच्च स्तर का लाभदायक और प्रभावशाली क्यों न हो, कुछ भी फ़ायदा नहीं होता।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, अतः हमें जलसा कराने का तभी फ़ायदा हो सकता है जब हम अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने और अपने अहद-ए-बैअत की तजदीद करने के लिए यहाँ उपस्थित हों और यह अहद करें कि यहाँ से हम नेकी और तक़्वा पर अमल करने वाले बनकर निकलेंगे।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारी जमाअत के लिए ख़ास तौर पर तक़्वा की ज़रूरत है, विशेष रूप से इस ख़याल से भी कि वे ऐसे व्यक्ति से संबंध रखते हैं और उसके सिलसिला-ए-बैअत में हैं जिसका दावा मामूरियत का है, ताकि वे लोग चाहे किसी प्रकार की दुश्मनी, बैर या शिर्क में गरस्त थे, या चाहे कितने ही दुनिया की ओर झुके हुए थे, इन सभी आफ़तों से निजात पाएँ।

आख़िर में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि

इन दिनों में ज़िक्र-ए-इलाही पर भी बहुत ज़ोर दें। अपने लिए, जमाअत के लिए और आलम-ए-इस्लाम के लिए बहुत दुआ करें। पूरी दुनिया के लिए भी बहुत दुआ करें।

अल्लाह तआला उन्हें अपनी पहचान प्रदान करे और हमें भी तब्लीग़ के उद्देश्य को पूरा करने और तक़्वा पर चलते हुए उन तक संदेश पहुँचाने की तौफ़ीक़ दे।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

**सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 07 अगस्त 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)**

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेमिसाल उदारता और दानशीलता

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शुक्रगुज़ारी के मापदंड आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अमल और उपदेशों का उल्लेख मैंने जलसा से पहले ख़ुत्बा में किया था। इसी सिलसिले में आज भी बयान करूँगा। अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने की ओर ध्यान दिलाते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

छोटी से छोटी बात पर शुक्रगुज़ारी

करने की भी हिदायत दी। चुनाँचे हजरत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह अपने बंदे के इस काम से खुश होता है कि जब वह कोई निवाला खाए तो उस पर उसकी हम्द करे या कोई घूँट पिए तो उस पर उसकी हम्द करे।

(सहीह मुस्लिम अनुवादित, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ वत्तौबा वल-इस्तिग़फ़ार, बाब इस्तिहबाब हम्दिल्लाह तआला... हदीस 89)4901), जिल्द नंबर 14, पृष्ठ नंबर 107, नूर फ़ाउंडेशन)

इसी तरह हजरत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन घर में दाख़िल हुए और रोटी का एक टुकड़ा पड़ा हुआ देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोटी का टुकड़ा उठाया, उसे साफ किया और खा लिया और फ़रमाया, "ऐ आयशा! सम्मान की चीज़ का सम्मान किया करो। जब यह रोज़ी की नेमत किसी क़ौम से चली जाती है तो फिर उन्हें वापस नहीं मिलती।"

(सुनन इब्न माजा, किताबुल अतइमा, बाबुन्नही अन इल्क़ाइत्तआम, हदीस 3353)

अतः यह आपका अमल था। फिर आप स्वयं भी ज़ाहिरी तौर पर हर छोटी बात पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते थे। उसकी नेमतों का शुक्रिया अदा करते थे। अपने घरवालों को भी इसकी नसीहत फ़रमाते थे। अतः

अगर हमें रोज़ी में बरकत की इच्छा है तो अल्लाह तआला की हर नेमत का शुक्र अदा करने की आवश्यकता है।

हजरत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी चचेरी बहन उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा बिन्ते अबी तालिब के घर तशरीफ़ ले गए। उस समय आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भूख लगी हुई थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "क्या तुम्हारे पास खाना है जिसे हम खाएँ?" उन्होंने अर्ज़ किया, "सूखी हुई रोटी के टुकड़ों के अलावा मेरे पास कुछ नहीं है और मुझे शर्म आती है कि मैं उन्हें आपकी सेवा में पेश करूँ।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "वही ले आओ।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें पानी में डालकर टुकड़े-टुकड़े किया। वह नमक ले आईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "क्या कोई सालन है?" उन्होंने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! सिरके के अलावा और कुछ नहीं है।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "वही ले आओ।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे अपने खाने पर डाल लिया और उसमें से खाया और अल्लाह अज़्ज़ व जल की हम्द की। फिर फ़रमाया, "सिरका क्या ही अच्छा सालन है। ऐ उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा! वह घर गरीब नहीं होता जिसमें सिरका हो।"

(अल-मुअजमुस्सग़ीर लित्तबरानी, अनुवादित, पृष्ठ 615 से 616, हदीस 951, शबीर ब्रदर्स लाहौर, 2014 ई.)

अतः ये थे आपके सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शुक्रगुज़ारी के मापदंड। हम इन देशों में रहते हैं। अनगिनत नेमतों से लाभ उठाते हैं और फिर भी हम अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी का हक़ अदा नहीं करते, बल्कि कभी-कभी छोटी-छोटी बातों पर शिकायतें पैदा हो जाती हैं। घरवालों से शिकायतें होती हैं कि यह नहीं लेकर आए, वह नहीं लेकर आए।

हजरत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन नाशुक्रे लोगों की तस्वीर और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की शुक्रगुज़ारी की तस्वीर को बड़े प्रभावशाली ढंग से बयान किया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तुम्हारे शरीर पर कभी फटा हुआ कपड़ा हो तो तुम रोने लग जाते हो और कहते हो कि हमारी किस्मत कैसी फूट गई कि हमें पहनने के लिए फटा हुआ कपड़ा मिला। लेकिन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को फटा हुआ कपड़ा मिलता तो उनका सिर अल्लाह तआला के सामने झुक जाता। उनकी ज़बान उसके एहसान के ज़िक्र से तर हो जाती और वे कहते, कितना अच्छा कपड़ा है जो हमारे ख़ुदा ने हमें दिया।

उन्हें अगर सूखी हुई रोटी का एक टुकड़ा चार दिन के बाद मिलता तो खुशी से उनकी आँखों में चमक पैदा हो जाती और वे कहते, अल्हम्दुलिल्लाह। ख़ुदा ने हमें अपने इनाम से नवाज़ा है।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु जमाअत के लोगों को संबोधित करके फ़रमाते हैं कि यही वजह है कि उन्हें जो लाभ सूखी रोटी के टुकड़ों ने दिया, वह तुम्हें पुलाव और क़ोरमा भी नहीं देते। आज जिसे पुलाव मिलता है, वह पुलाव तो खाता जाता है, मगर साथ ही उसमें यह अफ़सोस होता है कि पुलाव के साथ ज़र्दा भी होता। जिसे पुलाव और ज़र्दा मिल जाए, वह भी खून के आँसू रोता है और कहता है कि ज़र्दे के साथ फिरनी भी होती। जिसे दाल मिलती है, वह गोश्त के लिए रोता है। जिसे गोश्त मिलता है, वह चावलों के लिए तड़पता है। जिसे चार रोटियाँ खाने को मिलें। इस तरह आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने विस्तार से बयान किया है।

बहरहाल, आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, लेकिन उन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का क्या हाल था? वहाँ रूखी-सूखी रोटी का टुकड़ा भी मिलता तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कहते कि हम तो इस टुकड़े के भी हक़दार नहीं थे। यह तो ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल है कि उसने यह टुकड़ा हमें प्रदान किया।

नतीजा यह होता था कि वह रूखी रोटी का टुकड़ा उनके अंग-अंग को लग जाता था। उनके अंदर ऊँचे हौसले पैदा करता था। बुलंद हिम्मती पैदा होती थी। उनके शुक्रगुज़ारी के जज़्बे को और भी बढ़ा देता था।

फ़तह मक्का के दिन, जिस दिन अरब का मक़ाम-ए-अमीरत समाप्त हुआ और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस हज़ार पाक लोगों के साथ मक्का में दाखिल हुए, मक्का के बड़े-बड़े सरदार, जिनकी सारी ज़िंदगी इस्लाम की दुश्मनी में गुज़री थी, गर्दन झुकाए आपकी सेवा में उपस्थित हुए और आपने उनके सामने यह ऐलान किया कि जाओ, मैं तुम्हें कुछ नहीं कहता। तुम सब मेरी तरफ़ से आज़ाद हो।

बहरहाल, यह ऐलान करने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हजरत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए और उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चचेरी बहन थीं। जैसा कि बयान हुआ है कि आपने फ़रमाया, "खाने को कुछ है?" उन्होंने कहा, "खाने को तो कुछ नहीं, जिस तरह अभी बयान हुआ है। अगर मेरे पास होता तो मैं ख़ुद खिला देती, सिवाय एक सूखी रोटी के जो कई दिनों से पड़ी हुई है।"

तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा, "अच्छा, वही ले आओ।" जब वह रोटी सेवा में लेकर आईं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा, "यह बड़ी अच्छी रोटी है और तुम यूँ ही उदास हो रही हो कि मेरे घर में खाने को कुछ नहीं।"

फिर वह पानी लेकर आईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोटी को पानी

में भिगोया। इसके बाद फ़रमाया, "सालन है?" उन्होंने कहा, "सालन कहाँ से आना था? मेरे पास तो रोटी भी नहीं थी। अगर होता तो पहले ही मैं ले आती। थोड़ा-सा सिरका मेरे पास पड़ा हुआ है।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "क्या अच्छा सालन है।" वह सिरका ले आईं, जैसा कि अभी बयान हुआ है, और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भिगोई हुई रोटी को उसमें डालकर खाना शुरू कर दिया।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिरके को भी ख़ुदा की नेमत समझा और सूखी रोटी उससे खाकर उसके फ़ज़्ल का शुक्र अदा किया।

अतः वास्तव में हाज़मा इंसान की प्रसन्नता से पैदा होता है जो दिल में पैदा होती है। अगर खुशी से एक मामूली चीज़ भी खाई जाए तो बहुत अधिक ताक़त पैदा कर देती है, लेकिन अगर दुख के साथ अच्छी से अच्छी चीज़ भी खाई जाए तो वह इंसान के अंदर कोई ताक़त पैदा नहीं करती।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि लोग समझते हैं कि हमें ज़्यादा चीज़ें मिलनी चाहिए थीं और कम मिली हैं, मगर वे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम हर चीज़ के बारे में यह समझते थे कि कम मिलनी चाहिए थी मगर ज़्यादा मिल गई। उनकी शुक्रगुज़ारी का तरीका यह था कि थोड़ा-सा भी मिलता तो कहते, "यह भी बहुत ज़्यादा है।"

इस वजह से उनकी एक-एक रोटी भी उन्हें लाभ पहुँचा देती थी, जो तुम्हें दस-दस रोटियाँ भी लाभ नहीं पहुँचातीं।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि यह इसलिए है कि तुममें से कुछ लोगों ने अभी तक ईमान की मिठास नहीं चखी। तुम्हारे दिल इस सच्चाई से पूरी तरह अनजान हैं कि तुम्हें ख़ुदा ने एक महान आध्यात्मिक काम के लिए पैदा किया है और जिसे ख़ुदा आध्यात्मिक क्रांति और बदलाव के लिए पैदा करे, उसके सामने दुनिया का बड़े से बड़ा बादशाह भी कुछ नहीं है।

लेकिन इसके बजाय कि तुम अपने स्थान को समझो और अपने कर्तव्यों का सही एहसास पैदा करो, तुम बहुत ही छोटी और मामूली बातों की ओर ध्यान देने लग जाते हो और कहते हो, "मुझे यह नहीं मिला, मुझे वह नहीं मिला।"

जब तक तुम्हारे अंदर यह एहसास पैदा नहीं होता कि तुम्हें ख़ुदा ने किस उद्देश्य के लिए पैदा किया है और जब तक तुम अपने दर्जे को नहीं पहचानते, उस समय तक तुमने काम क्या करना है।

तुम्हें ख़ुदा ने इस स्थान पर खड़ा किया है कि तुम्हारा दिल खुशी की लहरों से हर समय भरा रहना चाहिए और तुम्हारे अंदर हर समय जागरूकता और सावधानी दिखाई देनी चाहिए। अगर यह चीज़ तुम्हारे अंदर पैदा हो जाए तो तुरंत तुम्हारे अंदर ऐसी ताक़त पैदा हो जाएगी कि बहुत थोड़ी से थोड़ी खुराक भी तुम्हें काम करने के योग्य बना देगी।

(माख़ूज़ अज़ अमल के बग़ैर कामयाबी हासिल नहीं हो सकती, अनवारुल उलूम, जिल्द 18, पृष्ठ 475 से 479)

(असदुल ग़ाबा, जिल्द 7, पृष्ठ 393, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या)

अतः यह वह नुस्खा है जिसे सामान्य रूप से हर अहमदी को, जिनके साधन कम हैं उन्हें भी, लेकिन विशेष रूप से वक़्फ़ीन-ए-ज़िंदगी को अपनी शुक्रगुज़ारी के मापदंड बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।

इसकी बहुत आवश्यकता है और इसी तरह अपनी बीवी-बच्चों में भी इसका अधिक से अधिक एहसास पैदा करने की आवश्यकता है क्योंकि

जिस उद्देश्य के लिए वक़्फ़ीन ने अपने आपको वक़्फ़ किया है, वह बहुत महान उद्देश्य है और महान उद्देश्य प्राप्त करने के लिए महान उद्देश्य प्राप्त करने वालों के नमूने सामने होने चाहिए। उन पर अमल करने की कोशिश होनी चाहिए, तभी वह उद्देश्य भी प्राप्त हो सकता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की सेवा पर शुक्रगुज़ारी के साथ उन्हें किस क़दर दुआओं से नवाज़ते थे, इसके बारे में अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत है। कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे संबोधित होकर फ़रमाया कि तुम अपनी सारी शाम और सारी रात चलोगे और कल इंशाअल्लाह पानी तक पहुँच जाओगे। किसी सफ़र में थे। लोग इस तरह चले कि कोई किसी की ओर ध्यान नहीं दे रहा था। हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चलते जाते थे, यहाँ तक कि आधी रात गुज़र गई और मैं आपके पहलू में था। वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऊँघ आई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी सवारी पर एक ओर झुक गए। मैं आपके पास गया। मैंने आपको जगाए बिना सहारा दिया, यहाँ तक कि आप ठीक होकर अपनी सवारी पर बैठ गए। फिर आप चलते गए, यहाँ तक कि रात का अधिकांश भाग गुज़र गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फिर ऊँघ के कारण अपनी सवारी पर झुक गए। वह कहते हैं कि मैंने फिर आपको बिना जगाए सहारा दिया, यहाँ तक कि आप फिर अपनी सवारी पर ठीक होकर बैठ गए।कहते हैं फिर इसी तरह चलते रहे, यहाँ तक कि सहर का आख़िरी हिस्सा आ गया। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहली दोनों बार से अधिक झुक गए, यहाँ तक कि क़रीब था कि आप मुड़कर गिर न जाएँ। मैं आपके पास पहुँचा और आपको सहारा दिया। चुनाँचे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिर उठाया और फ़रमाया, "कौन है?" मैंने अर्ज़ किया, "अबू क़तादा।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "तुम कब से इस तरह मेरे साथ चल रहे हो?" मैंने अर्ज़ किया कि रात से मैं आपके साथ चल रहा हूँ।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करे, जिस तरह तुमने उसके नबी की हिफ़ाज़त की है।"

(सहीह मुस्लिम अनुवादित, किताबुल मसाजिद व मवाज़ेउस्सलात, बाब क़ज़ाउज़्ज़लात... हदीस 311)1091), जिल्द नंबर 3, पृष्ठ नंबर 166–165, नूर फ़ाउंडेशन)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अत्यंत शुक्रगुज़ारी का इज़हार फ़रमाया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी शुक्रगुज़ारी के मापदंड का क्या उसवह हमारे सामने रखा।

एक रिवायत में आता है। हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मेरे रब अज़्ज़ व जल ने मेरे सामने मक्का की वादी को सोना बना देने की पेशकश की तो मैंने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! नहीं। बल्कि मैं चाहता हूँ कि एक दिन भूखा रहूँ और एक दिन पेट भरकर रहूँ। अच्छी तरह खाऊँ ताकि जब मैं पेट भरकर रहूँ तो तेरी हम्द व सना करूँ और तेरा शुक्र अदा करूँ और जब मैं भूखा हूँ तो तेरी बारगाह में आजिज़ी से गिड़गिड़ाऊँ और तुझसे दुआ करूँ।"

(किताब अख़लाक़ुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम व आदाबुह, इब्न हय्यान अल-असबहानी, पृष्ठ 224, दारुल किताब अल-अरबी, 1986 ई.)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। वह फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पानी पीते तो बर्तन से हटकर तीन साँसों में पीते थे। एक ही साँस में सारा गिलास नहीं पी लेते थे बल्कि तीन साँसों में पानी पीते थे। हर साँस पर अल्लाह की हम्द करते थे और आख़िरी साँस के बाद अल्लाह का शुक्र अदा फ़रमाते थे।

(किताब अख़लाक़ुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम व आदाबुह, इब्न हय्यान अल-असबहानी, पृष्ठ 191, दारुल किताब अल-अरबी, 1986 ई.)

जैसा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि पानी का घूँट भी लो तो शुक्र करो, उसकी हम्द करो। यह है पानी पीने का तरीका। शुक्रगुज़ारी के साथ यह स्वास्थ्य के लिए भी ज़रूरी है कि एकदम पीने के बजाय धीरे-धीरे रुककर पीना चाहिए।

बुख़ारी में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की एक लंबी रिवायत है। कहते हैं कि अल्लाह की ही क़सम है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। मैं अपने कलेजे को सहारा देने के लिए ज़मीन से लगा रहता था और कभी तो भूख के मारे अपने पेट पर पत्थर बाँध लिया करता था। एक दिन की बात नहीं, कई दिनों की बात है।

कहते हैं एक दिन मैं लोगों के रास्ते पर बैठ गया, जहाँ से वे लोग आते थे। बहुत बुरी हालत थी। वहाँ से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु गुज़रे। मैंने उनसे अल्लाह की किताब क़ुरआन करीम की ग़रीबों का ख़याल रखने के बारे में, न माँगने वालों के बारे में, भूखे लोगों के बारे में एक आयत पूछी तो उन्होंने मुझे उसका मतलब समझाया और चले गए। इसके बाद फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु गुज़रे। उन्होंने भी इसी तरह मुझे उसका मतलब बताया और चले गए।

इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास से गुज़रे और जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे देखा तो आप मुस्कुराए और मेरे नफ़्स की जो हालत थी, मेरे चेहरे की जो स्थिति थी, उसे समझ गए। फ़रमाया: "अबू हिर्र, अबा हिर्र।" मैंने कहा, "हाज़िर हूँ, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम!" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मेरे पीछे आ जाओ।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर चले गए। मैं आपके पीछे-पीछे चला। आप अंदर गए और मुझे भी अंदर जाने की अनुमति दी। आपके कमरे में अंदर एक दूध का प्याला रखा था। घरवालों से पूछा, "कहाँ से आया है?" उन्होंने बताया कि किसी तरफ़ से तोहफ़ा आया है।

बहरहाल, फ़रमाया: "अबू हुरैरा , अबू हुरैरा।" मैंने कहा, "हाज़िर हूँ, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अहल-ए-सुफ़्फ़ा के पास जाओ और उन्हें मेरे पास ले आओ।"

यह वे लोग थे जो अक्सर भूखे ही रहते थे और हर समय वहाँ बाहर ही बैठे रहते थे। लोग उन्हें अपने यहाँ खाना वग़ैरह ले जाकर खिला दिया करते थे। बहरहाल, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको बुलाया।

कहते हैं, मुझे उनका यह बुलाना बुरा लगा। मैंने कहा, "अहल-ए-सुफ़्फ़ा के सामने यह इतना-सा दूध क्या चीज़ है? मैं अधिक हक़दार था कि मैं इस दूध में से कुछ पीता जिससे मुझमें ताक़त आती और अगर वे आ गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे हुक्म दिया कि उन्हें दो तो मुझे देना ही होगा और फिर मुझे तो उम्मीद नहीं है कि इस दूध में से मेरे तक कुछ पहुँचे। और अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़रमाँबरदारी से कुछ चारा न था। इसके अलावा कोई चारा नहीं था।"

आख़िर में उनके पास आया और उनको बुलाया। वे अहल-ए-सुफ़्फ़ा चले आए और अपनी जगह पर बैठ गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अबा हिर्र, अबू हुरैरा।" मैंने कहा, "हाज़िर हूँ, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।" फ़रमाया, "यह लो और उनको दो।"

कहते हैं, मैंने वह प्याला लिया। एक आदमी को देता, वह पीता, यहाँ तक कि वह पेट भरकर पी लेता। फिर दूसरा, तीसरा, इस तरह पीते जाते, यहाँ तक कि आख़िर में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुँचा और जो लोग बैठे थे, सब पेट भरकर पी चुके थे। उन्होंने अच्छी तरह दूध पी लिया था।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह प्याला लिया और उसे अपने हाथ पर रखा तो मेरी तरफ़ देखा और मुस्कुराए और फ़रमाया, "अबू हुरैरा।" मैंने कहा, "हाज़िर हूँ, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मैं और तुम बाकी रह गए हैं।"

मैंने कहा, "या रसूलल्लाह! आपने सच फ़रमाया।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "बैठ जाओ और पियो।"

मैं बैठ गया और मैंने पीना शुरू किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "और पियो।" मैंने और पिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यही फ़रमाते रहे, "और पियो।" मैंने इतना पिया कि आख़िर मैंने कहा, "अब नहीं। उस ज़ात की क़सम जिसने आपको सच्चाई के साथ भेजा है, मैं अब उसके लिए कोई रास्ता नहीं पाता जिसमें इसे उतारूँ। बिल्कुल पेट भर गया है।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मुझे दिखाओ।" तो मैंने प्याला आपको दे दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया, हालाँकि भूख आपको भी थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और अल्लाह का नाम लिया और वह बचा हुआ दूध पी लिया।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब कैफ़ा काना ऐशुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम... हदीस 6452, अनुवादित, जिल्द 15, पृष्ठ 220 से 223, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)

तो यह आपकी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शुक्रगुज़ारी थी और इस शुक्रगुज़ारी की वजह से अल्लाह तआला ने ऐसी बरकत डाली कि सभी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी पी लिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी अपनी भूख इससे मिटाई।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस पर कोई एहसान किया जाए, वह उसका बदला दे और जिसमें यह ताक़त न हो, वह उस एहसान का लोगों के सामने ज़िक्र करे, क्योंकि जो व्यक्ति ज़िक्र करता है वह शुक्र अदा करता है और जो व्यक्ति बनावटी तौर पर अपने आपको बड़ाई वाला समझता है, जबकि वह बड़ाई उसे प्राप्त नहीं, तो वह उस व्यक्ति की तरह है जिसने झूठ के दो कपड़े पहने हुए हैं, अर्थात सिर से पाँव तक झूठा है।"

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, मुस्नद आयशा, जिल्द 8, पृष्ठ 143–142, हदीस 25100, आलमुल कुतुब)

रिवायत में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मामूँ अस्वद बिन वहब बिन अब्द मनाफ़ बिन ज़ुहरा ने आपकी सेवा में उपस्थित होने की अनुमति माँगी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "ऐ मेरे मामूँ! अंदर तशरीफ़ लाएँ।" वह अंदर आए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए अपनी चादर बिछा दी। फ़रमाया, "इस पर बैठ जाएँ क्योंकि मामूँ बाप के स्थान पर होता है। ऐ मामूँ! जिस व्यक्ति पर कोई एहसान किया जाए और वह उसका शुक्रिया अदा न करे तो कम-से-कम उस एहसान का ज़िक्र ही कर दे, क्योंकि जब वह उसका ज़िक्र करता है तो मानो उसने शुक्र अदा कर दिया।"

(अस्सीरतुल हल्बिया, जिल्द 2, पृष्ठ 313, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 2008 ई.)

और शुक्र के इस पहलू को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी सीरत में हम किस तरह देखते हैं।

बहुत सारे घटनाएँ हैं। हमेशा अपने उपकार करने वालों को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने याद किया और हर अवसर पर उनका ज़िक्र करते रहे। उदाहरण के लिए हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा, जो आपकी पत्नी थीं, जिन्होंने कदम-कदम पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़द्र करते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अच्छा व्यवहार किया। वह मक्का की मालदार महिला थीं। जब उनका विवाह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हुआ तो उन्होंने अपना सारा माल हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों में रख दिया कि जिस तरह चाहें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस्तेमाल फ़रमाएँ।

फिर दावा-ए-नुबुव्वत के बाद हर तकलीफ़ और हर मुश्किल में पूरे इख़लास व वफ़ा के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहीं, यहाँ तक कि दस नबवी में उनकी मृत्यु हो गई और नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी इस वफ़ादार पत्नी के एहसानों को अपने आख़िरी दम तक याद रखा और हमेशा उनकी नेकियों का ज़िक्र फ़रमाते रहे। इतना ज़िक्र फ़रमाते कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूसरी पवित्र पत्नियों को ईर्ष्या होती।

चुनाँचे हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान फ़रमाती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़िक्र फ़रमाते तो उनकी प्रशंसा करते और बहुत अच्छी प्रशंसा करते। एक दिन मुझे ईर्ष्या हुई और मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि आप उस बूढ़ी का ज़िक्र करते रहते हैं, हालाँकि अल्लाह अज़्ज़ व जल ने आपको उनसे बेहतर पत्नियाँ प्रदान कर दी हैं। इस पर

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे उससे बेहतर कोई पत्नी नहीं दी, क्योंकि ख़दीजा ने मुझे उस समय स्वीकार किया जब दूसरों ने मेरा इनकार किया और जब लोगों ने मेरा इनकार किया तो उसने मेरी पुष्टि की। जब लोगों ने मुझे माल से वंचित किया तो उसने अपने माल से मेरी मदद की और अल्लाह तआला ने मुझे उसी से संतान प्रदान की, जबकि दूसरी औरतों से मुझे संतान नहीं दी।"

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, मुस्नद आयशा, जिल्द 8, पृष्ठ 204, हदीस 25376, आलमुल कुतुब, 1998 ई.)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सारी उम्र उनकी सेवाओं को याद रखा और हमेशा शुक्रगुज़ारी का इज़हार फ़रमाते रहे।

इसी तरह अपने दोस्तों का, जिन्होंने जिस तरह भी आपकी मदद की, बड़े शुक्रगुज़ारी के साथ ज़िक्र करते थे। एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के बीच मतभेद हुआ और इसकी सूचना जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुँची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरों को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के बड़े-बड़े एहसान याद दिलाए और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को उन्हें तकलीफ़ न देने की नसीहत फ़रमाई।

जब दोनों अपना मामला लेकर आख़िर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ गए तो दोनों को एहसास हुआ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी कहा, मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर ज़्यादती की है, मैं माफ़ी चाहता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मैंने ज़्यादती की है, माफ़ी चाहता हूँ।

बहरहाल, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बातों पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि नापसंदगी का इज़हार किया कि उन्होंने

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से क्यों बहस की है और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अबू बकर! अल्लाह आपकी पर्दापोशी फ़रमाए और दरगुज़र फ़रमाए।"

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी शर्मिंदा हुए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के घर पर आए। जब ये दोनों बैठे हुए थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "ऐ लोगो! अल्लाह ने मुझे तुम्हारी ओर भेजा और तुमने कहा, तू झूठा है और अबू बकर ने कहा, सच्चा है और उन्होंने अपनी जान और माल से मेरे साथ हमदर्दी का इज़्हार किया। तो क्या तुम मेरे साथी को मेरे लिए छोड़ोगे भी या नहीं?" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो बार फ़रमाया। फिर इसके बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को कभी तकलीफ़ नहीं दी गई। हमेशा आपका ख़याल रखा जाता था।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइल असहाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब क़ौलुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम: "लौ कुन्तु मुत्तख़िज़न ख़लीलन", हदीस 3661, अनुवादित, जिल्द 7, पृष्ठ 154–153, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों से संबोधित होकर फ़रमाया: "अल्लाह ने एक बंदे को इख़्तियार दिया है कि दुनिया को पसंद करे या उस नेमत को पसंद करे जो अल्लाह के पास है, तो उस बंदे ने वह नेमत पसंद की जो अल्लाह के पास है।"

अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि यह सुनकर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु रो पड़े और हमें उनके रोने पर आश्चर्य हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो एक ऐसे बंदे का ज़िक्र फ़रमा रहे हैं जिसे इख़्तियार दिया गया है और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु सुनकर रो पड़े हैं। वास्तव में इससे मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही थे, जिन्हें इख़्तियार दिया गया था। रावी कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हम सहाबा में इस बात को सबसे अधिक जानने वाले थे, इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु रो पड़े।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"तुम लोगों में मुझ पर अपनी सोहबत और माल खर्च करने के लिहाज़ से सबसे अधिक एहसान करने वाले अबू बकर हैं। अगर मैं अपने रब के अलावा किसी को अपना जानी दोस्त बनाने वाला होता तो अबू बकर को बनाता।"

(सहीह अल-बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइल असहाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बाब क़ौलुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम: "सुद्दुल अबवाब..." हदीस 3654, अनुवादित, जिल्द 7, पृष्ठ 150–149, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)

अब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के रोने की वजह यह थी कि इस बात को सुनकर उन्हें ख़याल आ गया था कि अल्लाह तआला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने पास बुलाना चाहता है।

जब मुसलमानों पर मक्का में तरह-तरह की मुसीबतें ढाई गईं तो उन्होंने ख़ुदा तआला की अनुमति से हबशा की ओर हिजरत की। उस समय हबशा के बादशाह ने उन्हें अपने देश में पनाह दी। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस बादशाह नजाशी के इस एहसान को हमेशा याद रखा और हर अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने कथनों और कार्यों से इस एहसान की शुक्रगुज़ारी का इज़्हार फ़रमाया।

चुनाँचे जब नजाशी का प्रतिनिधिमंडल रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके स्वागत के लिए खड़े हुए। आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! हम काफ़ी हैं।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "उन्होंने हमारे साथियों को बड़े सम्मान से रखा था, बड़ी इज़्ज़त दी थी और मैं पसंद करता हूँ कि उनके इस एहसान का बदला ख़ुद चुकाऊँ।"

(अस्सीरतुन नबविय्या लिइब्न कसीर, जिल्द 2, पृष्ठ 31, मक्तबा दारुल-मआरिफ़ा)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी शुक्रगुज़ारी के जज़्बे के तहत बादशाह की ग़ायबाना नमाज़-ए-जनाज़ा भी पढ़ी थी। चुनाँचे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब नजाशी की मृत्यु की ख़बर मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी ग़ायबाना नमाज़-ए-जनाज़ा अदा की और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आपके पीछे सफ़ें बनाईं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसमें चार तकबीरें कहीं।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल, मुस्नद अबी हुरैरा, जिल्द 3, पृष्ठ 551, हदीस 9644, आलमुल कुतुब)

अंसार के अमल पर आपकी शुक्रगुज़ारी का इज़्हार

एक रिवायत में इस तरह मिलता है कि जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत के तेरहवें साल, हिजरत से पहले, मदीना से सत्तर लोगों ने बैअत की। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत से पहले नुबुव्वत के तेरहवें साल मदीना से सत्तर लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की और वादा किया कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाएँगे तो हम अपनी जानों की तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करेंगे।

इस अवसर पर एक अंसारी सहाबी ने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! मदीना के यहूदियों के साथ हमारे पुराने संबंध हैं। आपका साथ देने से वे संबंध टूट जाएँगे। ऐसा न हो कि जब अल्लाह आपको प्रभुत्व दे तो आप हमें छोड़ दें और मक्का वापस आ जाएँ।"

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "नहीं, नहीं। ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। तुम्हारा ख़ून मेरा ख़ून होगा। तुम्हारे दोस्त मेरे दोस्त और तुम्हारे दुश्मन मेरे दुश्मन।"

(अस्सीरतुन नबविय्या लिइब्न हिशाम, पृष्ठ 315, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 2001 ई.)(सुबलुल हुदा वअर्रशाद, जिल्द 3, पृष्ठ 201, मक्तबा दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैतुल-ख़ला में गए तो मैंने आपके लिए वुज़ू का पानी रखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा, "यह किसने रखा है?" तो आपने बताया। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको दुआ दी कि:

"अल्लाहुम्म फ़क़्क़िहहु फ़िद्दीन।"

"ऐ अल्लाह! इसे दीन की समझ दे।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनुवादित, किताबुल-वुज़ू, बाब वज़्इल-माइ इंदल-ख़ला, हदीस 143, जिल्द 1, पृष्ठ 233, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)

मामूली से काम पर भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शुक्रगुज़ारी का इज़्हार फ़रमाते थे।

एक रिवायत है कि ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के बाद रास्ते में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विवाह हज़रत सफ़िय्या रज़ियल्लाहु अन्हा से हुआ। शादी वाली रात हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ालिद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने रात भर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ेमे के बाहर पहरा दिया।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह जागे और देखा कि अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर पहरा दे रहे हैं तो उनसे पूछा, "ऐ अबू अय्यूब! ख़ैरियत तो है? क्या बात है?"

उन्होंने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे आपके बारे में इस औरत से ख़तरा महसूस हुआ कि कहीं यह आपको नुकसान न पहुँचाए, क्योंकि जंग-ए-ख़ैबर में आपने इसके बाप और इसके पति और इसके लोगों को मार दिया और इसने नया-नया इस्लाम स्वीकार किया है। इसलिए मुझे इसकी तरफ़ से आपके बारे में डर पैदा हुआ।"

रावी बयान करते हैं कि उनका यह इख़्लास देखकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुआ की कि:

"ऐ अल्लाह! तू अबू अय्यूब की इसी तरह हिफ़ाज़त फ़रमा, जिस तरह उसने रात भर मेरी हिफ़ाज़त की।"

(अर्रौज़ुल-अनफ़, जिल्द 4, पृष्ठ 85, अबू अय्यूब यहुरुसुर्रसूल लैलतन ..., दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या)

मुतइम बिन अदी वह व्यक्ति था जिसने कुरैश के अत्याचारी लिखित समझौते को फाड़ दिया था और ताइफ़ से वापसी पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी पनाह में लेकर मक्का में दाख़िल किया था। इसलिए जब बद्र के कैदी आपके सामने लाए गए तो आपने मुतइम के एहसानों का उल्लेख किया। रिवायत में है कि मुहम्मद बिन जुबैर ने अपने पिता हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बद्र के कैदियों के बारे

में फ़रमाया: अगर मुतइम बिन अदी जीवित होते और इन नापाक लोगों के बारे में मुझसे सिफारिश करते तो मैं उनकी खातिर इन्हें छोड़ देता।

(सहीह अल-बुख़ारी अनुवादित, किताब फ़र्ज़ुल-ख़ुम्स, अध्याय: नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बंदियों के बारे में फ़रमान ..., हदीस 3139, जिल्द 5, पृष्ठ 488–487, प्रकाशित नज़ारत इशाअत) (अस्सीरतुल हल्बिय्या, जिल्द 1, पृष्ठ 507 और 487, मक्तबा दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस घटना को लिखा है और इस घटना को लिखने के बाद लिखा है कि मुतइम पक्का मुशरिक था और इसी हालत में उसकी मृत्यु हुई, लेकिन उसके स्वभाव में भलमनसाहत थी। इसलिए कुरैश का वह अत्याचारी लिखित समझौता, जिसके कारण मुसलमान शिअबे अबी तालिब में घिरे हुए थे, मुतइम ने ही फाड़ा था और जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताइफ़ से वापस आए तो उस समय भी मुतइम ने ही आपको अपनी पनाह में लेकर मक्का में दाख़िल किया था। यह उसी एहसान की याद थी जिससे प्रभावित होकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये शब्द फ़रमाए। वास्तव में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह एक प्रमुख विशेषता थी कि जब कभी कोई व्यक्ति आपके साथ थोड़ा-सा भी अच्छा व्यवहार करता तो आप उसके एहसान को कभी नहीं भूलते थे और आपकी हमेशा यह इच्छा रहती थी कि आपको उसके एहसान का व्यावहारिक रूप से धन्यवाद करने का अवसर मिलता रहे। ऐसा नहीं था कि दुनिया वालों की तरह जब आप एक बार किसी के एहसान के बदले में अच्छा व्यवहार कर लेते तो फिर कहने लगते कि बस अब एहसान का बदला उतर गया है, बल्कि आप पूरी ज़िंदगी उसके एहसान का बदला चुकाने की कोशिश करते या उसका ज़िक्र करते।

(सीरत ख़ातमुन-नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लिया गया, पृष्ठ 366–365)

अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ मख़ज़ूमी अपने पिता से और वे उनके दादा से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हुनैन के युद्ध के लिए तशरीफ़ ले गए तो उनसे तीस या चालीस हज़ार का कर्ज़ लिया गया और जब हुनैन से वापस तशरीफ़ लाए तो उसे अदा कर दिया। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि अल्लाह तआला तुम्हारे परिवार और तुम्हारे माल में बरकत दे।

माल और कर्ज़ का बदला पूरी तरह अदा करना और प्रशंसा करना है।

अर्थात कर्ज़ देने वाले का शुक्रिया अदा करना भी ज़रूरी है।

(सुनन इब्न माजा, किताबुस्सदक़ात, अध्याय: अच्छा बदला देना, हदीस 2424)

हज़रत अम्र बिन अख़तब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पानी माँगा। मैं आपके लिए एक बर्तन में पानी लाया। उसमें एक बाल था। मैंने वह बाल निकाल दिया। यह एक मामूली-सी बात थी। और वह बर्तन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पेश कर दिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: اَللّٰهُمَّ جَمِّلْهُ। अर्थात, “हे अल्लाह! इसे सुंदर बना दे।”

ऐसा कोई मामूली अवसर भी नहीं होता था जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शुक्रिया अदा न करते हों।

रावी कहते हैं कि बाद में मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस दुआ का उन पर प्रभाव देखा कि उन्होंने तिरानवे वर्ष की आयु पाई और उनके सिर तथा दाढ़ी में कोई भी बाल सफेद नहीं था।

(मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, मुसनद अम्र बिन अख़तब अबू ज़ैद, जिल्द 7, पृष्ठ 600, हदीस 23271, आलमुल-कुतुब, 1998 ई.)

इसी तरह क़तादा से एक रिवायत है। उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से सुना। उन्होंने कहा कि हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा: अनस आपकी सेवा में है। आपने अनस के लिए दुआ की कि हे अल्लाह! उसके माल और संतान को बढ़ा दे और जो तूने उसे दिया है उसमें उसके लिए बरकत दे।

(सहीह अल-बुख़ारी अनुवादित, किताबुद्दुआत, अध्याय: अल्लाह तबारक व तआला का फ़रमान “और उन पर दुआ करो...” हदीस 6334, जिल्द 15, पृष्ठ 59, नज़ारत इशाअत)

इस दुआ के पूरा होने का उल्लेख इस तरह मिलता है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! निश्चय ही मेरा माल बहुत अधिक है और मेरी संतान तथा मेरी संतान की संतान की संख्या आज लगभग सौ तक पहुँच गई है।

(सहीह मुस्लिम अनुवादित, किताब फ़ज़ाइलुस्सहाबा, अध्याय: हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के गुणों में से, जिल्द 13, पृष्ठ 124, हदीस 4517 143)), प्रकाशित नूर फ़ाउंडेशन)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं। यह हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस व्यक्ति पर कोई एहसान किया गया और फिर उसने उसका ज़िक्र किया तो उसने उसका शुक्र अदा कर दिया और जिसने उसे छिपाया तो उसने उसकी नाशुक्री की।

(सुनन अबी दाऊद, किताबुल-अदब, अध्याय: अच्छे काम का शुक्र अदा करने के बारे में, हदीस 4814)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उपहार स्वीकार करते और उसका बदला भी देते थे।

(सुनन अबी दाऊद, किताबुल-बुयूअ, अध्याय: उपहार स्वीकार करने के बारे में, हदीस 3536)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिस व्यक्ति को कोई उपहार दिया जाए, अगर उसमें उसकी सामर्थ्य हो तो उस उपहार का बदला दे और अगर सामर्थ्य न हो तो उपहार देने वाले की प्रशंसा करे, क्योंकि जिसने उसकी प्रशंसा की उसने शुक्र अदा कर दिया और जिसने उसे छिपाया तो उसने नाशुक्री की।

(सुनन अबी दाऊद, किताबुल-अदब, अध्याय: अच्छे काम का शुक्र अदा करने के बारे में, हदीस 4813)

ये वे बुनियादी नैतिक गुण हैं जो समाज में प्रेम और सहनशीलता पैदा करने के लिए बहुत ज़रूरी हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक देहाती ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक ऊँटनी उपहार में दी तो आपने उसके बदले उसे छह ऊँटनियाँ दीं।

(जामेअ अत-तिर्मिज़ी, अध्याय: गुणों के अध्याय, अध्याय: सक़ीफ़ और बनी हनीफ़ा के बारे में, हदीस 3945)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और आपसे माँगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे आधा वसक अनाज उधार लेकर दिया, अर्थात लगभग अस्सी किलो के करीब। फिर कर्ज़ देने वाला व्यक्ति उसका तकाज़ा करने आया तो आपने उसे एक वसक दिया और फ़रमाया: आधा उसके कर्ज़ की अदायगी के रूप में और आधा उसके लिए शुक्रिया के रूप में उपहार है।

(अश-शिफ़ा बि-तअरीफ़ि हुक़ूक़िल-मुस्तफ़ा, क़ाज़ी अयाज़, पृष्ठ 78–77, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, 2002 ई.)

हज़रत अबू हिंद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि तमीम बिन औस अद-दारी शाम से मदीना की ओर कंदीलें, जैतून का तेल और बटी हुई रस्सियाँ लाए। जब वे मदीना पहुँचे तो संयोग से वह शुक्रवार की रात थी। उन्होंने अपने गुलाम को आदेश दिया। उसने रस्सियाँ तैयार कीं। मस्जिदे नबवी में कंदीलें लटकाईं, उनमें तेल डाला, उनमें बत्तियाँ रखीं और जब सूरज डूब गया तो तमीम ने अपने गुलाम को आदेश दिया कि उन्हें रोशन कर दो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद की ओर तशरीफ़ लाए तो देखा कि मस्जिद उन चिराग़ों से रोशन हो रही है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह देखकर बहुत खुश हुए और फ़रमाया: यह किसने किया है? लोगों ने निवेदन किया: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! तमीम दारी ने। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें दुआ दी और फ़रमाया: तुमने तो इस्लाम को रोशन कर दिया है। अल्लाह दुनिया और आख़िरत में तुम्हें रोशन करे। और फिर फ़रमाया: अगर मेरी कोई बेटी होती तो मैं तुम्हारा निकाह उससे कर देता। अर्थात उनके इस काम की इतनी प्रशंसा की कि उन्होंने मस्जिद को रोशन किया।

(अल-जामेअ लि-अहकामिल-कुरआन (तफ़्सीर अल-क़ुर्तुबी), जिल्द 2, पृष्ठ 2206–2205, आयत “फ़ी बुयूतिन अज़िनल्लाहु अन तुरफ़अ व युज़्कर फ़ीहस्मुहू” के अंतर्गत, दार इब्न हज़्म) (अत-तबक़ातुल-कुबरा, जिल्द 7, पृष्ठ 286, मक्तबा दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात को नमाज़ में इतना खड़े रहते थे कि आपके पैर फट जाते थे। यह देखकर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप ऐसा क्यों करते हैं, जबकि अल्लाह ने आपको पहले भी गुनाहों से सुरक्षित रखा है और बाद में भी। आपने फ़रमाया: क्या मुझे यह पसंद नहीं कि मैं शुक्र करने वाला बंदा बन जाऊँ?

यहाँ लिखा है कि जब आपका शरीर भारी हो गया। हो सकता है कि जब खड़े होते हुए पैरों में कोई तकलीफ़ होती तो बहरहाल आप बैठकर नमाज़ पढ़ते थे, लेकिन बैठकर नमाज़ पढ़ते हुए क़ियाम अर्थात सूरह फ़ातिहा और सूरहें तो बैठकर पढ़ लेते थे, लेकिन जब रुकू करना चाहते तो फिर खड़े हो जाते और फिर रुकू करते थे।

(सहीह अल-बुखारी अनुवादित, किताबुत-तफ़्सीर ... अध्याय: अल्लाह के फ़रमान "ताकि अल्लाह तुम्हारे पिछले गुनाहों को क्षमा कर दे..." के बारे में, हदीस 4837, जिल्द 12, पृष्ठ 83, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)

अता रिवायत करते हैं कि एक बार मैं इब्न उमर और उबैदुल्लाह बिन उमर के साथ हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सेवा में उपस्थित हुआ और हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से कहा कि मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोई सबसे अद्भुत बात बताइए जो आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में देखी हो।

इस पर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा आपको याद करके बेचैन होकर रो पड़ीं और कहने लगीं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हर अदा ही निराली होती थी। कहती हैं कि एक बार का ज़िक्र है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रात मेरे पास तशरीफ़ लाए, मेरे साथ बिस्तर पर लेटे। आपने फ़रमाया: ऐ आयशा! क्या आज की रात तू मुझे अनुमति देती है कि मैं अपने रब की इबादत कर लूँ? मैंने कहा: ख़ुदा की क़सम! मुझे तो आपकी इच्छा का सम्मान और आपका निकट रहना पसंद है। मेरी ओर से आपको अनुमति है।

तब आप उठे और मश्कीज़े से वुज़ू किया। नमाज़ के लिए खड़े हो गए और नमाज़ में इतना रोए कि आपके आँसू आपके सीने पर गिरने लगे। नमाज़ के बाद आप दाईं ओर टेक लगाकर इस तरह बैठ गए कि आपका दायाँ हाथ आपके दाएँ गाल के नीचे था और फिर रोना शुरू कर दिया, यहाँ तक कि आपके आँसू ज़मीन पर टपकने लगे। यहाँ तक कि फ़ज्र की अज़ान देने के बाद बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु आए। जब उन्होंने आपको इस तरह रोते हुए देखा तो कहने लगे: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप इतना क्यों रोते हैं, जबकि अल्लाह तआला आपके पिछले और आगे होने वाले सारे गुनाह क्षमा कर चुका है।

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क्या मैं अल्लाह का शुक्र करने वाला बंदा न बनूँ और मैं क्यों न रोऊँ कि आज रात मेरे रब ने ये आयतें उतारी हैं और वे आले-इमरान की ये आयतें हैं:

"निश्चय ही आकाशों और धरती की पैदाइश में और रात और दिन के बदलने में बुद्धिमान लोगों के लिए निशानियाँ हैं। जो लोग खड़े और बैठे हुए तथा अपने पहलुओं के बल अल्लाह को याद करते हैं और आकाशों और धरती की पैदाइश में विचार करते रहते हैं। और बे-साख़्ता कहते हैं: हे हमारे रब! तूने हरगिज़ इसे बेकार पैदा नहीं किया। तू पाक है। अतः हमें आग के अज़ाब से बचा।"

[(आले-इमरान: 192–191)]

इसका अनुवाद यह है कि निश्चित रूप से आकाशों और धरती की पैदाइश में और रात और दिन के बदलने में बुद्धि रखने वाले लोगों के लिए निशानियाँ हैं। वे लोग जो अल्लाह को खड़े हुए भी और बैठे हुए भी और अपने पहलुओं के बल भी याद करते हैं और आकाश तथा धरती की पैदाइश में सोच-विचार करते रहते हैं। और बे-साख़्ता कहते हैं कि हे हमारे रब! तूने हरगिज़ इसे बेकार पैदा नहीं किया। तू पाक है। अतः हमें आग के अज़ाब से बचा।

(तफ़्सीर रूहुल-बयान, सूरह आले-इमरान की आयत नंबर 192–191 के अंतर्गत, जिल्द 2, पृष्ठ 150, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 2003 ई.)

(अख़लाक़ुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व आदाबुहू, पृष्ठ 409–408, "ज़िक्रु फ़ेअलिही फ़ी लैलतिही व फ़ी फ़िराशिही ...", हदीस 553, दारुल-लुलुइया, क़ाहिरा, 2016 ई.)

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन आयतों को पढ़ने के बाद फ़रमाया कि उस व्यक्ति के लिए हलाकत है जो इन आयतों को पढ़ता है, लेकिन उन पर सोच-विचार नहीं करता।

(रूहुल-मआनी, सूरह आले-इमरान की आयत नंबर 192–191 के अंतर्गत, जिल्द 4, पृष्ठ 500–499, दार इहयाउत-तुरास, 1999 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस हदीस की व्याख्या करते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि:

"अरबी के शब्द ये हैं: اَلَا اَكُوْنُ عَبْدًا شَكُوْرًا।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शुक्रगुज़ारी के बारे में जो हदीस थी, उसमें फ़रमाया कि 'ऐ आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा! क्या केवल ख़ुदा का ही काम है कि वह एहसान करने वाला बने। क्या बंदे का काम नहीं कि वह अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करे? अगर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जैसे इंसान भी उन सभी कुर्बानियों के बावजूद जो आपने कीं, और उन प्रेम की भावनाओं की इतनी अधिकता के बावजूद जो आप ख़ुदा तआला के बारे में रखते थे, फिर भी इस बात के ज़रूरतमंद थे कि रातों को उठकर अल्लाह तआला के सामने इतनी-इतनी देर खड़े रहते कि आपके पैर सूज जाते, दिन में इबादत करते और अपनी ज़िंदगी को अधिक से अधिक ख़ुदा तआला से मिलने के योग्य बनाते, तो और कौन इंसान है जो अपने आपको इन ज़िम्मेदारियों से अलग समझ सके।'"

(क़ियामे पाकिस्तान और हमारी ज़िम्मेदारियाँ, अनवारुल-उलूम, जिल्द 19, पृष्ठ 440–439)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी इस बारे में फ़रमाते हैं:

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ों में इस क़दर रोते और क़ियाम करते कि आपके पैरों पर सूजन आ जाती। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने निवेदन किया कि ख़ुदा तआला ने आपके सभी गुनाह माफ़ कर दिए हैं, फिर इतनी मेहनत और रोने का क्या कारण है? आपने फ़रमाया: क्या मैं ख़ुदा का शुक्रगुज़ार बंदा न बनूँ।"

(मलफ़ूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जिल्द 6, पृष्ठ 231)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह हालत हम सब से तकाज़ा करती है कि हम अल्लाह तआला की नेमतों का शुक्रगुज़ार होते हुए अपनी शुक्रगुज़ारी को आख़िरी हद तक पहुँचाएँ। शुक्रगुज़ारी बैठ जाने का नाम नहीं, शुक्रगुज़ारी अमल में और तरक़्क़ी चाहती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक़्वा के सबसे ऊँचे स्तर पर थे, इसलिए आपने 'अब्दे-शकूर' होने का भी सबसे ऊँचा स्तर हासिल किया और साथ हमें नसीहत फ़रमाई कि तुम भी अब्दे-शकूर बनो। अगर अल्लाह तआला का सच्चा बंदा होने का हक़ अदा करना है तो जैसे-जैसे अल्लाह तआला तुम पर फ़ज़्ल नाज़िल फ़रमाता है, उसी तरह इबादत के स्तर ऊँचे करो और शुक्रगुज़ारी करो। ख़ुदा तआला के फ़ज़्लों के नतीजे में सुस्ती नहीं होनी चाहिए, बल्कि इबादत और शुक्रगुज़ारी में आगे से आगे बढ़ना चाहिए। इसलिए जब तक हम इस नुस्खे पर अमल करेंगे, हम तरक़्क़ी की मंज़िलें तय करते जाएँगे, व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक रूप से भी। इंशाअल्लाह।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसकी व्याख्या में आगे एक जगह यह भी फ़रमाया कि नादान है वह व्यक्ति जिसने कहा, "करम हाए तू मारा करद गुस्ताख़।" फ़ारसी का यह मिसरा है कि तेरे करम ही हैं जिन्होंने मुझे गुस्ताख़ बना दिया है। शायर अल्लाह से यह कहता है कि अल्लाह तआला के करम ने मुझे गुस्ताख़ बना दिया। शुक्रगुज़ार बनने के बजाय गुस्ताख़ बन गया। क्योंकि ख़ुदा के फ़ज़्ल इंसान को गुस्ताख़ नहीं बनाया करते। वह तो गलत कहता है और उसे सरकश नहीं बनाया करते, बल्कि और अधिक शुक्रगुज़ार और फ़रमाँबरदार बनाते हैं।

इसलिए तुम लोग पहले की तुलना में अधिक शुक्रगुज़ार बन जाओ, क्योंकि ख़ुदा तआला फ़रमाता है:

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ

"अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा।"

[(इब्राहीम: 8)]

(माख़ूज़ अज़ ख़ुतबाते महमूद, जिल्द 5, पृष्ठ 362–361)

अल्लाह तआला हमें सच्चा शुक्रगुज़ार बनाए। सच्चा आबिद बनाए। हम हमेशा उसके फ़ज़्लों को हासिल करने वाले बने रहें।

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

विजय : पराजय के आवरण में

मुसलमानों ने उन का पीछा करना आरम्भ किया। यह देख कर दर्रे की सुरक्षा पर नियुक्त सैनिकों ने अपने अफ़सर से कहा कि अब तो शत्रु पराजित हो चुका है, अब हमें भी जिहाद का पुण्य प्राप्त करने दिया जाए। अफ़सर ने उन्हें इस बात से रोका तथा रसूले करीम (स.अ.व.) का आदेश स्मरण कराया परन्तु उन्होंने कहा रसूले करीम (स.अ.व.) ने जो कुछ फ़रमाया था केवल ज़ोर देने के लिए फ़रमाया था अन्यथा आप का अभिप्राय यह तो नहीं हो सकता था कि शत्रु भाग भी जाए तो भी यहां खड़े रहो। यह कहते हुए उन्होंने दर्रा छोड़ दिया और रणभूमि में कूद पड़े। भागती हुई सेना में से ख़ालिद बिन वलीद जो बाद में इस्लाम के महान सेनापति सिद्ध हुए की दृष्टि ख़ाली दर्रे पर पड़ी जहां केवल कुछ सैनिक अपने अफ़सर के साथ खड़े थे। ख़ालिद ने अपनी (काफ़िरों की) सेना के अन्य सेनापति उमर बिन अलआस को आवाज़ दी और कहा कि पीछे पहाड़ी दर्रे पर तनिक दृष्टि डालो। उमर बिन अलआस ने जब दर्रे पर दृष्टि डाली तो समझा कि मुझे जीवन का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो रहा है। दोनों सेनापतियों ने अपनी भागती हुई सेना को संभाला और इस्लामी सेना को भारी क्षति पहुँचाते हुए पर्वत पर चढ़ गए, वहां दर्रे की सुरक्षा के लिए थोड़े से मुसलमान खड़े रह गए थे, उनको टुकड़े-टुकड़े करते हुए पीछे से इस्लामी सेना पर टूट पड़े। उनके विजय-नाद को सुनकर शत्रु की भागती सेना रणभूमि की ओर लौट पड़ी। यह आक्रमण ऐसा अचानक हुआ तथा काफ़िरों का पीछा करने के कारण मुसलमान इतने बिखर गए कि उन लोगों के मुक़ाबले में कोई समुचित इस्लामी सेना नहीं थी। रणभूमि में अकेला-अकेला सैनिक दिखाई दे रहा था, जिन में से कुछ को उन लोगों ने मार दिया, शेष इस असमंजस में थे कि यह हो क्या गया है पीछे की ओर दौड़े। कुछ सहाबा दौड़ कर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर एकत्र हो गए जिनकी संख्या अधिक से अधिक तीस थी[1]। काफ़िरों ने उस स्थान पर भयंकर आक्रमण किया जहां रसूले करीम (स.अ.व.) खड़े थे। सहाबा एक के बाद एक आप[स.] की रक्षा करते हुए मारे जाने लगे। कृपाणधारियों के अतिरिक्त धनुषधारी ऊँचे टीलों पर खड़े होकर रसूले करीम (स.अ.व.) की ओर अंधाधुंध वाण-वर्षा कर रहे थे। उस समय तल्हा[रज़ि.] ने जो क़ुरैश में से थे तथा मक्का के मुहाजिरों में से थे, यह देखते हुए कि शत्रु सब के सब तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की ओर फेंक रहा है अपना हाथ रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के मुख के आगे खड़ा कर दिया। वाण-वर्षा में जो तीर लक्ष्य पर गिरता था वह 'तल्हा[रज़ि.]' के हाथ पर गिरता था, परन्तु प्राणों की बाज़ी लगाने वाला वफ़ादार सिपाही अपने हाथ को कोई हरकत नहीं देता था। इस प्रकार तीर पड़ते गए और तल्हा[रज़ि.] का हाथ घावों से छलनी हो कर बिल्कुल बेकार हो गया और उनका एक ही हाथ शेष रह गया। वर्षों पश्चात् इस्लाम की चौथी ख़िलाफ़त के युग में जब मुसलमानों में गृह-युद्ध आरम्भ हुआ तो किसी शत्रु ने व्यंग के तौर पर तल्हा को टुण्डा कहा। इस पर एक अन्य सहाबी ने कहा हाँ टुण्डा ही है परन्तु कैसा मुबारक टुण्डा है। तुम्हें ज्ञात है तल्हा का यह हाथ रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की रक्षा में टुण्डा हुआ था। उहद के युद्धोपरान्त किसी व्यक्ति ने तल्हा[रज़ि.] से पूछा कि जब वाण हाथ पर लगते थे तो क्या आप को दर्द नहीं होता था और क्या आप के मुख से उफ़ नहीं निकलती थी? तल्हा[रज़ि.] ने उत्तर दिया दर्द भी होता था और उफ़ भी निकलना चाहती थी परन्तु मैं उफ़ करता नहीं था ताकि ऐसा न हो कि उफ़ करते समय मेरा हाथ हिल जाए और तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख पर आ लगे।

परन्तु ये कुछ लोग इतनी विशाल सेना का कब तक मुक़ाबला कर सकते थे क़ाफ़िरों की सेना का एक गिरोह आगे बढ़ा और उस ने रसूले करीम (स.अ.व.) के पास के जवानों को धकेला कर पीछे कर दिया। रसूले करीम (स.अ.व.) वहां अकेले पर्वत की भांति खड़े थे कि बड़े ज़ोर से एक पत्थर आप के खोद (Security Cap लोहे की टोपी) पर लगा ख़ोद की कील आप के सर पर घुस गई और आप बेहोश होकर उन सहाबा[रज़ि.] के शवों पर जा पड़े जो आप के चारों ओर लड़ते हुए शहीद हो चुके थे। तत्पश्चात् कुछ अन्य सहाबा[रज़ि.] आप के शरीर की रक्षा करते हुए शहीद हुए और उनके शव आप के शरीर पर जा गिरे। काफ़िरों ने आप के शरीर को शवों के नीचे दबा हुआ देख कर समझा कि आप मारे जा चुके हैं। अतः मक्का की सेना स्वयं को पुनर्गठन के उद्देश्य से पीछे हट गई। जो सहाबा आप के पास खड़े थे और जिन्हें काफ़िरों की सेना का रेला ढकेल कर पीछे ले गया था उनमें हज़रत उमर[रज़ि.] भी थे। जब आप ने देखा कि रणभूमि समस्त लड़ने वालों से साफ़ हो चुकी है तो आप को विश्वास हो गया कि रसूले करीम (स.अ.व.) शहीद हो गए हैं और वह व्यक्ति जिस ने बाद में एक ही समय में क़ैसर तथा किस्रा का मुकाबला बड़ी बहादुरी से किया था और उस का हृदय कभी नहीं घबराया और न भयभीत हुआ था। वह एक पत्थर पर बैठकर बच्चों की भांति रोने लग गया, इतने में मालिक[रज़ि.] नामक एक सहाबी जो इस्लामी सेना की विजय के समय पीछे हट गए थे; क्योंकि वह निराहार थे और रात से उन्होंने कुछ नहीं खाया था। जब विजय हो गई तो कुछ खजूरें लेकर पीछे की ओर चले गए ताकि उन्हें खाकर अपनी भूख दूर करें। वह विजय की ख़ुशी में टहल रहे थे कि टहलते-टहलते हज़रत उमर[रज़ि.] तक जा पहुँचे और उमर[रज़ि.] को रोते देख कर हैरान हुए और आश्चर्य से पूछा उमर आप को क्या हुआ? इस्लाम की विजय पर आप को प्रसन्न होना चाहिए या रोना चाहिए? उमर ने उत्तर में कहा मालिक! कदाचित तुम विजय के तुरन्त बाद पीछे हट आए थे, तुम्हें मालूम नहीं कि काफ़िरों की सेना पहाड़ी के पीछे से चक्कर काटकर इस्लामी सेना पर टूट पड़ी और चूंकि मुसलमान अस्त-व्यस्त हो चुके थे, उनका मुकाबला कोई न कर सका। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) कुछ सहाबा के साथ उन के मुक़ाबले के लिए खड़े हुए और मुक़ाबला करते-करते शहीद हो गए। मालिक[रज़ि.] ने कहा उमर यदि यह बात सही है तो आप यहां बैठे क्यों रो रहे हैं, जिस लोक में हमारा प्यारा गया है हमें भी तो वहीं जाना चाहिए। यह कहा और वह अन्तिम खजूर जो आप के हाथ में थी जिसे आप मुख में डालने ही वाले थे उसे यह कहते हुए फेंक दिया कि हे खजूर! मालिक और स्वर्ग के मध्य तेरे अतिरिक्त और कौन सी वस्तु रोक है यह कहा और तलवार लेकर शत्रु की सेना में घुस गए। तीन हज़ार सेना के मुकाबले में एक व्यक्ति कर ही क्या सकता था, परन्तु एक ख़ुदा की उपासना करने वाली भावना बहुतों पर भारी होती है। मालिक[रज़ि.] इस निर्भयता से लड़े कि शत्रु स्तब्ध रह गया परन्तु अन्ततः घायल हुए, फिर गिरे तथा गिर कर भी शत्रुओं के सैनिकों पर आक्रमण करते रहे, जिस के परिणामस्वरूप मक्का के काफ़िरों ने आप पर इतना भयानक आक्रमण किया कि युद्ध के पश्चात् आप के शव के सत्तर टुकड़े मिले, यहां तक कि आप का शव पहचाना नहीं जाता था। अन्त में आप की बहन ने एक उंगली से पहचान कर बताया कि यह मेरे भाई का शव है।

वे सहाबा[रज़ि.] जो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर थे और जो काफ़िरों की सेना की बहुतात के कारण पीछे ढकेल दिए गए थे, काफ़िरों के पीछे हटते ही वे पुनः रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास एकत्र हो गए। उन्होंने आपके मुबारक शरीर को उठाया तथा एक सहाबी उबैदा बिन जर्राह ने अपने दांतों से आप के सर में घुसी हुई कील को ज़ोर से निकाला जिस से उनके दो दांत टूट गए। थोड़ी देर में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को होश आ गया और सहाबा ने मैदान में चारों ओर लोग दौड़ा दिए कि मुसलमान पुनः एकत्र हो जाएं। भागी हुई सेना पुनः एकत्र होने लगी। रसूले करीम (स.अ.व.) उन्हें लेकर पर्वत के आंचल में चले गए। जब पर्वत के आंचल में बची हुई सेना खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा हम ने मुहम्मद (स.अ.व.) को मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू सुफ़यान की बात का उत्तर न दिया ताकि ऐसा न हो कि शत्रु वस्तु स्थिति से अवगत हो कर पुनः आक्रमण कर दे और घायल मुसलमान पुनः शत्रु के आक्रमण के शिकार हो जाएँ। जब इस्लामी सेना से इस बात का कोई उत्तर न मिला तो अबू सुफ़यान को विश्वास हो गया कि उस का अनुमान उचित है तब उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ देकर कहा हम ने अबू बक़र[रज़ि.] को भी मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू बकर[रज़ि.] को आदेश दिया कि कोई उत्तर न दें। अबू सुफ़यान ने फिर आवाज़ दी हमने उमर[रज़ि.] को भी मार दिया। तब उमर[रज़ि.] जो बहुत जोशीले व्यक्ति थे, उन्होंने उसके प्रत्युत्तर में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा की कृपा से जीवित हैं और तुम्हारा मुकाबला करने के लिए तैयार हैं परन्तु रसूले करीम (स.अ.व.) ने रोक दिया कि मुसलमानों को कष्ट में न डालो, ख़ामोश रहो। अतः काफ़िरों को विश्वास हो गया कि इस्लाम के प्रवर्तक तथा उनके दाएं-बाएं की सेना को भी हमने मौत के घाट उतार दिया है। इस पर अबू सुफ़यान और उसके साथियों ने ख़ुशी से जयघोष किया اُعْلُ هُبُل اُعْلُ هُبُل 'हमारी सम्माननीय मूर्ति हुबुल की जय हो' कि उसने आज इस्लाम का अन्त कर दिया है। वही रसूले करीम (स.अ.व.) जो अपनी मृत्यु की घोषणा पर, अबूबकर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर तथा उमर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर ख़ामोश रहने का उपदेश दे रहे थे ताकि ऐसा न हो कि घायल मुसलमानों पर काफ़िरों की सेना फिर से आक्रमण न कर दे और मुट्ठी भर मुसलमान उसके हाथों शहीद हो जाएं। अब जब कि एक ख़ुदा की प्रतिष्ठा का प्रश्न उत्पन्न हुआ और मैदान में द्वैतवाद का जयघोष किया गया तो आपकी आत्मा व्याकुल हो उठी तथा आपने अत्यन्त जोश के साथ सहाबा की ओर देखते हुए फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते। सहाबा ने कहा हे अल्लाह के

रसूल! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो اَللّٰہُ اَعْلٰی وَاَجَلُّ (अल्लाहो आ'ला व अजल्ल) तुम झूठ बोलते हो कि हुबुल की शान ऊँची हुई। ख़ुदा एक है उसका कोई साथी नहीं, वह प्रतिष्ठावान है तथा बड़ी शान वाला है। और इस प्रकार आपने अपने जीवित होने की सूचना शत्रुओं को पहुँचा दी। इस वीरता और निर्भीकतापूर्ण उत्तर का प्रभाव काफ़िरों की सेना पर इतना गहरा पड़ा कि इसके बावजूद कि उनकी आशाएं इस उत्तर से मिट्टी में मिल गईं तथा इसके बावजूद कि उन के सामने मुट्ठी भर मुसलमान खड़े थे जिन पर आक्रमण करके उन्हें मार देना सांसारिक दृष्टि से बिल्कुल संभव था वे दोबारा आक्रमण करने का साहस न कर सके और उन्हें जिस सीमा तक विजय प्राप्त हुई थी उसी की खुशियां मनाते हुए मक्का को प्रस्थान किया। उहद के युद्ध में स्पष्ट विजय के पश्चात् एक पराजय का रूप देखने को मिला परन्तु यह युद्ध वास्तव में मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की सच्चाई का एक महान चमत्कार पूर्ण प्रमाण था। इस युद्ध में रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार मुसलमानों को पहले सफलता प्राप्त हुई फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार आप के प्रिय चाचा हम्ज़ा[रज़ि.] युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार स्वयं आप[स.] भी घायल हुए और बहुत से सहाबा शहीद हुए। इसके अतिरिक्त मुसलमानों को ऐसी आत्मीय शुद्धि और ईमान के प्रदर्शन का अवसर प्राप्त हुआ, जिस का उदाहरण इतिहास में और कहीं नहीं मिलता। इस वफ़ादारी और ईमान के प्रदर्शन की कुछ घटनाएं तो पहले वर्णन हो चुकी हैं एक अन्य घटना भी उल्लेखनीय है जिस से ज्ञात होता है

शेष ..

पृष्ठ 12 का शेष यहाँ से मुक़दमा बदलवाने की कोशिश की जाए और दूसरा यह कि चाहे किसी तरह हो, मगर मिर्ज़ा साहब इस अगली पेशी में अदालत में उपस्थित न हों और डॉक्टर का प्रमाण-पत्र पेश कर दें।"

मौलवी साहब ने बयान किया कि डॉक्टर साहब ने यह घटना बयान की तो हम सब भी बहुत भयभीत हो गए और फैसला किया कि उसी समय क़ादियान कोई आदमी रवाना कर दिया जाए जो हज़रत साहब को ये घटनाएँ सुनाए।

रात हो चुकी थी। हमने इक्का तलाश किया। यद्यपि कई इक्के मौजूद थे, मगर विरोध का इतना जोश था कि कोई इक्का नहीं मिल रहा था। हमने चार गुना किराया देने की पेशकश की, मगर कोई इक्के वाला राज़ी नहीं हुआ। आखिर हमने शेख़ हामिद अली और अब्दुर्रहीम बावर्ची तथा एक तीसरे व्यक्ति को पैदल क़ादियान रवाना किया।

वे सुबह की नमाज़ के समय क़ादियान पहुँचे और हज़रत साहब से संक्षेप में अर्ज़ किया। हुज़ूर ने बेपरवाही से फरमाया, "ख़ैर, हम बटाला चलते हैं। ख़्वाजा साहब और मौलवी मुहम्मद अली साहब लाहौर से वापस आते हुए वहाँ हमें मिलेंगे। उनसे ज़िक्र करेंगे और वहाँ पता लग जाएगा कि मुक़दमा बदलवाने की कोशिश का क्या नतीजा हुआ।"

इसी तरह उसी दिन हुज़ूर बटाला आ गए। गाड़ी में मौलवी मुहम्मद अली साहब और ख़्वाजा साहब भी मिल गए। उन्होंने ख़बर दी कि मुक़दमा बदलवाने की कोशिश कामयाब नहीं हुई।

फिर हज़रत साहब गुरदासपुर चले आए और रास्ते में ख़्वाजा साहब और मौलवी साहब को इस घटना की कोई सूचना नहीं दी।

जब आप गुरदासपुर मकान पर पहुँचे तो आदत के अनुसार अलग कमरे में चारपाई पर जा लेटे, मगर उस समय हमारे शरीर के रोंगटे खड़े हो रहे थे कि अब क्या होगा।

हुज़ूर ने थोड़ी देर बाद मुझे बुलाया। मैं गया। उस समय हज़रत साहब ने अपने दोनों हाथों के पंजे मिलाकर अपने सिर के नीचे रखे हुए थे और चित लेटे हुए थे। मेरे जाने पर एक पहलू पर होकर कोहनी के बल अपनी हथेली पर सिर का सहारा देकर लेट गए और मुझसे फरमाया, "मैंने आपको इसलिए बुलाया है कि वह सारा वाक़िया सुनूँ कि क्या है।"

उस समय कमरे में कोई और आदमी नहीं था। केवल दरवाज़े पर मियाँ शादी ख़ान खड़े थे।

मैंने सारा किस्सा सुनाया कि किस तरह हम यहाँ आकर डॉक्टर इस्माईल ख़ान साहब को रोते हुए पाए, फिर किस तरह डॉक्टर साहब ने मुंशी मुहम्मद हुसैन के आने की घटना सुनाई और फिर मुहम्मद हुसैन ने क्या घटना सुनाई।

हुज़ूर ख़ामोशी से सुनते रहे। जब मैं "शिकार" के शब्द पर पहुँचा तो अचानक हज़रत साहब उठकर बैठ गए। आपकी आँखें चमक उठीं और चेहरा लाल हो गया। आपने फरमाया:

"मैं इसका शिकार हूँ! मैं शिकार नहीं हूँ, मैं शेर हूँ और शेर भी ख़ुदा का शेर। वह भला ख़ुदा के शेर पर हाथ डाल सकता है? ऐसा करके तो देखे।"

ये शब्द कहते हुए आपकी आवाज़ इतनी ऊँची हो गई कि कमरे के बाहर भी सभी लोग चौंक उठे और हैरत के साथ उधर देखने लगे, मगर कमरे के अंदर कोई नहीं आया।

हुज़ूर ने कई बार "ख़ुदा के शेर" के शब्द दोहराए। उस समय आपकी आँखें, जो हमेशा झुकी हुई और आधी बंद रहती थीं, वास्तव में शेर की आँखों की तरह खुलकर शोले की तरह चमक रही थीं और चेहरा इतना लाल था कि देखा नहीं जाता था।

फिर आपने फरमाया: "मैं क्या करूँ? मैंने तो ख़ुदा के सामने पेश किया है कि मैं तेरे दीन की खातिर अपने हाथ और पाँव में लोहा पहनने को तैयार हूँ, मगर वह कहता है कि नहीं, मैं तुझे ज़िल्लत से बचाऊँगा और इज़्ज़त के साथ बरी करूँगा।"

फिर आप मुहब्बत-ए-इलाही पर तक़रीर फरमाने लग गए और लगभग आधे घंटे तक जोश के साथ बोलते रहे। लेकिन फिर अचानक बोलते-बोलते आपको उबकाई आई और साथ ही क़ै हुई, जो बिल्कुल ख़ून की थी। उसमें कुछ ख़ून जमा हुआ था और कुछ बहने वाला था।

हज़रत ने क़ै से सिर उठाकर रुमाल से अपना मुँह पोंछा और आँखें भी पोंछीं, जो क़ै की वजह से पानी से भर आई थीं। मगर आपको यह मालूम नहीं हुआ कि क़ै में क्या निकला है, क्योंकि आपने अचानक झुककर क़ै की और फिर सिर उठा लिया।

लेकिन मैं उसे देखने के लिए झुका तो हुज़ूर ने फरमाया, "क्या है?"

मैंने अर्ज़ किया, "हुज़ूर! क़ै में ख़ून निकला है।" तब हुज़ूर ने उसकी तरफ देखा। फिर ख़्वाजा साहब, मौलवी मुहम्मद अली साहब और दूसरे सभी लोग कमरे में आ गए और डॉक्टर को बुलाया गया। डॉक्टर अंग्रेज़ था। वह आया और क़ै देखकर ख़्वाजा साहब के साथ अंग्रेज़ी में बातें करता रहा, जिसका मतलब यह था कि इस उम्र में इस तरह ख़ून की क़ै आना ख़तरनाक है।

फिर उसने कहा, "ये आराम क्यों नहीं करते?" ख़्वाजा साहब ने कहा, "आराम किस तरह करें? मजिस्ट्रेट साहब लगातार पास-पास की तारीख़ें डालकर परेशान करते हैं, हालाँकि मामूली मुक़दमा है, जो इसी तरह तय हो सकता है।"

उसने कहा, "इस समय आराम ज़रूरी है। मैं प्रमाण-पत्र लिख देता हूँ। कितने समय के लिए प्रमाण-पत्र चाहिए?"

फिर खुद ही कहने लगा, "मेरे ख़याल में दो महीने आराम करना चाहिए।"

ख़्वाजा साहब ने कहा, "फिलहाल एक महीना काफ़ी होगा।"

उसने तुरंत एक महीने के लिए प्रमाण-पत्र लिख दिया और लिखा कि इस अवधि में मैं इन्हें कचहरी में पेश होने के योग्य नहीं समझता।

इसके बाद हज़रत साहब ने वापसी का आदेश दिया। मगर हम सब डरते थे कि अब कहीं कोई नया मुक़दमा शुरू न हो जाए, क्योंकि दूसरे दिन पेशी थी और हुज़ूर गुरदासपुर आकर अदालत की अनुमति के बिना वापस जा रहे थे। लेकिन हज़रत साहब के चेहरे पर बिल्कुल इत्मीनान था। इसी तरह हम सब क़ादियान चले आए।

बाद में हमने सुना कि मजिस्ट्रेट ने प्रमाण-पत्र पर बहुत जिरह की और बहुत तिलमिलाया तथा डॉक्टर को गवाही के लिए बुलाया। मगर उस अंग्रेज़ डॉक्टर ने कहा कि मेरा प्रमाण-पत्र बिल्कुल सही है और मैं अपने फ़न का विशेषज्ञ हूँ। इस पर मेरे फ़न के अनुसार कोई आपत्ति नहीं की जा सकती और मेरा प्रमाण-पत्र सभी ऊँची अदालतों तक मान्य है।

मजिस्ट्रेट बड़बड़ाता रहा, मगर कुछ पेश न गई। फिर उसी अवधि में उसका गुरदासपुर से तबादला हो गया। इसके अलावा किसी ज़ाहिर तौर पर अज्ञात कारण से उसका पद भी घटा दिया गया, अर्थात उसे ई.ए.सी. से मुंसिफ़ कर दिया गया।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि संभवतः इस मजिस्ट्रेट का नाम चंदूलाल था और वह तारीख़ जिस पर इस अवसर पर हज़रत साहब ने पेश होना था, संभवतः 16 फ़रवरी 1904 ई. थी।

★ ★ ★

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऑस्ट्रेलिया दौरा 2013

(भाग -2)

निकाह की घोषणा

कार्यक्रम के अनुसार नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने एक निकाह की घोषणा फ़रमाई।

ख़ुत्बा-ए-निकाह और मस्नूना आयतों की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मैं एक निकाह की घोषणा करूँगा जो अज़ीज़ा रुबीना कौसर पुत्री मक़रम बशीर अहमद साहिब का है, जो अज़ीज़म अहसनुल-जज़ा, छात्र जामिआ अहमदिया रबवा के साथ तय हुआ है।

अहसनुल-जज़ा मक़रम नज़ीर अहमद साहिब के बेटे हैं। दोनों लड़के और लड़की के वली यहाँ मौजूद नहीं हैं। दोनों के वकील यहाँ मौजूद हैं। अज़ीज़म अहसनुल-जज़ा चूँकि जामिआ अहमदिया के छात्र हैं और इंशाअल्लाह मुबल्लिग़-ए-सिलसिला बनने वाले हैं, इसलिए उन्होंने यहाँ निकाह पढ़ाने की दरख़्वास्त की थी। इस वजह से मैं यह निकाह पढ़ा रहा हूँ।

लड़का और लड़की यहाँ मौजूद नहीं हैं। दोनों के वकील यहाँ मौजूद हैं। उन्हीं के माध्यम से यह संदेश उन तक पहुँचना चाहिए। विशेष रूप से लड़की जब वक़्फ़-ए-ज़िंदगी से शादी करने के लिए तैयार होती है तो उसे हमेशा यह एहसास रहना चाहिए कि मैंने दुनिया को अपने सामने नहीं रखना, बल्कि मेरा निकाह वक़्फ़-ए-ज़िंदगी मुबल्लिग़-ए-सिलसिला के साथ हो रहा है तो मैंने दूसरों से बढ़कर दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने के अपने वचन को निभाना है। तो इसी सोच के साथ ही शादियाँ कायम रह सकती हैं और सफल हो सकती हैं, न कि यह सोच हो कि दुनियावी इच्छाओं को अपने ऊपर हावी कर लेना है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अगर दोनों वक़्फ़ की भावना के साथ अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाने वाले हों तो ख़ुदा तआला थोड़े से पैसों में भी बरकत डाल देता है और अगर यह चीज़ नहीं है तो फिर करोड़ों की दौलत का भी पता नहीं चलता कि कहाँ गई।

फिर निकाह की आयतें जो आपके सामने पढ़ी गई हैं, उनमें अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि इस दुनिया की चिंता न करो। अगले जहान की चिंता करो। इस नसीहत को सामने रखेंगे तो अल्लाह तआला के अनगिनत फ़ज़्ल होते हैं। यह केवल नए बनने वाले रिश्ते के बारे में हिदायत नहीं दी गई, बल्कि सबके लिए यह नसीहत है जो पहले विवाहित हैं या आज विवाह कर रहे हैं, या भविष्य में विवाह करेंगे कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राथमिकता दें। अगर ऐसा करेंगे तो फिर इस दुनिया की नेमतों के भी वारिस होंगे और आख़िरत की नेमतों के भी वारिस होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत स्पष्ट रूप से फ़रमाया है कि जो लोग दुनिया के पीछे चलते हैं, उन्हें दुनिया तो मिल जाती है, लेकिन इस दुनिया के मिलने की बेचैनी उनके दिल में होती है। यही बात अनुभव से सामने आती है कि जितना दुनिया के पीछे दौड़ते हैं, उतनी ही अधिक बेचैनियाँ बढ़ती चली जाती हैं। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: अतः यदि तुम दीन के पीछे जाओगे तो तुम्हें दीन भी मिलेगा और दुनिया भी मिलेगी और अल्लाह की प्रसन्नता भी मिल जाएगी। और यह महत्वपूर्ण बात है जिसे हम सबको अपनी ज़िंदगियों में भी और अपने घरों में भी हमेशा सामने रखना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया: अल्लाह करे कि यह रिश्ता हर तरह से बरकत वाला हो, दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाला हो, अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने वाला हो। जिस वक़्फ़ की भावना के साथ अज़ीज़म ने वक़्फ़ किया है और जामिआ में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, उस वक़्फ़ की भावना को हमेशा कायम रखने वाले हों और उनकी पत्नी भी उनकी मददगार रहें और अल्लाह तआला भविष्य में भी उनसे नेक संतान की नस्ल जारी फ़रमाए।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ ने दोनों पक्षों से ईजाब व क़बूल करवाया और बाद में फ़रमाया: अल्लाह तआला हर तरह से इस रिश्ते में बरकत दे। अब दुआ कर लें।

अंत में हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। बाद में कार्यक्रम के अनुसार नेशनल मजलिस-ए-आमिला ब्रिस्बेन, मजलिस-ए-आमिला ख़ुद्दामुल-अहमदिया और मजलिस-ए-आमिला अंसारुल्लाह ब्रिस्बेन तथा विभिन्न विभागों, जिनमें विभाग ज़ियाफ़त, विभाग ट्रांसपोर्ट, विभाग सिक्योरिटी, विभाग ख़िदमत-ए-ख़ल्क़, विभाग समई व बसरी और कुछ अन्य विभाग शामिल थे, ने अपने प्यारे आका के साथ तस्वीरें बनवाने की सादत पाई।

अंत में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जिनकी किसी भी विभाग में तस्वीर नहीं हुई, वे भी सब आ जाएँ और तस्वीर बनवा लें। चुनाँचे इस तरह जो दोस्त रह गए थे, उन सबने भी हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सम्मान प्राप्त किया।

आज स्थानीय जमाअत ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ के दौरे के दौरान विभिन्न विभागों में ड्यूटी देने वाले कार्यकर्ताओं और जमाअत के दोस्तों के लिए एक सामूहिक भोजन का कार्यक्रम रखा था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ ने कृपा करते हुए इसमें शिरकत फ़रमाई और लगभग सारी जमाअत ने अपने प्यारे आका के साथ भोजन किया। भोजन के बाद एक स्थानीय दोस्त मक़रम मुश्ताक़ अहमद साहिब ने मस्जिद मसरूर के उद्घाटन के संबंध में अपनी एक पंजाबी नज़्म पढ़कर सुनाई।

महिलाओं के भोजन के लिए अलग व्यवस्था की गई थी। हज़रत बेगम साहिबा मद्दज़िल्लुहा महिलाओं के हिस्से में तशरीफ़ ले गईं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ कृपा करते हुए कुछ देर के लिए महिलाओं के हिस्से में भी तशरीफ़ ले गए और अस्सलामो अलैकुम कहा। महिलाओं ने ज़ियारत का सम्मान प्राप्त किया।

बाद में साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

27 अक्टूबर, रविवार 2013 ई.

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजे मस्जिद मसरूर में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, फ़ैक्स और रिपोर्टें देखीं और हिदायतों से नवाज़ा।

सुबह नौ बजकर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और मुबल्लिग़-ए-सिलसिला ब्रिस्बेन मक़रम मसऊद अहमद शाहिद साहिब को जमाअत की शिक्षा व प्रशिक्षण तथा अन्य विभिन्न मामलों और कार्यक्रमों के आयोजन के संबंध में हिदायतें दीं और बाक़ायदा एक योजना और काम की प्लानिंग करके अपनी रिपोर्ट भेजने की हिदायत फ़रमाई।

ब्रिस्बेन से सिडनी के लिए रवाना

आज कार्यक्रम के अनुसार ब्रिस्बेन (Brisbane) से वापस सिडनी (Sydney) के लिए रवाना होना था।

दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान से बाहर तशरीफ़ लाए। आज सुबह से ही जमाअत के दोस्त, पुरुष और महिलाएँ तथा बच्चे और बच्चियाँ अपने प्यारे आका को विदा करने के लिए जमाअत के इस केंद्र में जमा होना शुरू हो गए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ कृपा करते हुए लगभग दस मिनट दोस्तों के बीच मौजूद रहे। दोस्तों ने उत्साह से नारे लगाए और महिलाएँ लगातार अपने हाथ हिलाते हुए दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर रही थीं।

अब विदाई के क्षण करीब आ रहे थे। एक बहुत ही भावुक और दर्द भरा वातावरण था। बहुत से पुरुषों और महिलाओं की आँखों से आँसू जारी थे। सात साल बाद इन लोगों को ख़लीफ़तुल-मसीह का क़ुर्ब मिला था और बहुत क़रीब से दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। और इनमें से अधिकतर ऐसे लोग और परिवार थे जिन्होंने अपनी ज़िंदगी में पहली बार ख़लीफ़तुल-मसीह को इतने क़रीब से देखा था और कुछ दिन अपने प्यारे आका के क़ुर्ब में गुज़ारे थे। इसलिए यह जुदाई निश्चित रूप से उन सबके लिए बहुत कठिन थी।

दस बजकर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। लगभग पचास मिनट के सफ़र के बाद ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की ब्रिस्बेन के इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर तशरीफ़-आवरी हुई और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ स्पेशल लाउंज में तशरीफ़ ले गए।

बारह बजकर पाँच मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ जहाज़ पर सवार हुए। ऑस्ट्रेलियन एयरलाइन Qantas Air की उड़ान QF529 बारह बजकर पैंतीस मिनट पर ब्रिस्बेन से सिडनी के लिए रवाना हुई। लगभग डेढ़ घंटे की उड़ान के बाद सिडनी के स्थानीय समय के अनुसार तीन बजकर पाँच मिनट पर जहाज़ सिडनी के इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर उतरा। मक़रम अमीर साहिब ऑस्ट्रेलिया महमूद अहमद शाहिद साहिब, दोनों नायब अमीर मक़रम ख़ालिद सैफ़ुल्लाह साहिब और मक़रम मुहम्मद नासिर काहलूँ साहिब इसी जहाज़ में साथ सफ़र कर रहे थे।

एयरपोर्ट पर नेशनल जनरल सेक्रेटरी जमाअत ऑस्ट्रेलिया ने नेशनल आमिला के कुछ सदस्यों के साथ हुज़ूर अनवर का स्वागत किया।

एयरपोर्ट से रवाना होकर लगभग चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ की मस्जिद बैतुल-हुदा सिडनी में तशरीफ़-आवरी हुई। जहाँ एक बार फिर जमाअत सिडनी के जमाअत के दोस्तों, पुरुषों और महिलाओं ने अपने प्यारे आका का उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने अपना हाथ उठाकर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर मस्जिद बैतुल-हुदा में नमाज़ ज़ुहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने आवासीय हिस्से में तशरीफ़ ले गए।

शेष ..

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 01 October 2026 Issue No. 40

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{105} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

हाफ़िज़ रोशन अली साहब ने मुझसे बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिन दिनों "अया अरज़ मुमिद्दक़ दफ़ाकि मुदम्मिरु" वाला क़सीदा एजाज़-ए-अहमदी में लिखा, तो उसे दोबारा पढ़ने के बाद बाहर आकर हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल से पूछने लगे कि मौलवी साहब! क्या "अया" भी नदा के लिए आता है? अर्ज़ किया गया कि हाँ हुज़ूर! बहुत मशहूर है। फरमाया कि शेर में लिखा गया है, हमें इसका ख़याल नहीं था।

इसके अलावा हाफ़िज़ साहब बयान करते हैं कि कई बार हुज़ूर फरमाते थे कि कुछ शब्द अपने आप हमारे क़लम से लिखे जाते हैं और हमें उनके अर्थ मालूम नहीं होते। हाफ़िज़ साहब कहते हैं कि कई बार हज़रत साहब से ऐसा मुहावरा लिखा जाता था जिसका आम शब्दकोश में भी इस्तेमाल नहीं मिलता था, लेकिन फिर बहुत तलाश करने से उसका पता चल जाता था।

{106} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

मौलवी ज़ुल्फ़िक़ार अली ख़ान साहब ने मुझसे बयान किया कि जब करम दीन के मुक़दमे के लिए हज़रत साहब गुरदासपुर में थे, तो वहाँ आपके पास इलाहाबाद के तीन ग़ैर-अहमदी मेहमान आए, जिनमें से एक का नाम मौलवी इलाही बख़्श था। उनकी हज़रत साहब से बातचीत होती रही और आखिरकार वे क़ायल हो गए।

एक बार जब हज़रत साहब मकान के आँगन में टहल रहे थे और मौलवी इलाही बख़्श साहब भी साथ-साथ चल रहे थे, तो मौलवी इलाही बख़्श साहब ने हज़रत साहब से कहा कि अगर मैंने बैअत कर ली तो मेरे साथ और बहुत से लोग बैअत करेंगे।

हज़रत साहब चलते-चलते रुक गए और आपका चेहरा लाल हो गया। आपने फरमाया:

"मुझे क्या परवाह है! यह ख़ुदा का काम है। वह स्वयं लोगों की गर्दनें पकड़-पकड़कर मेरे पैरों पर गिराएगा और गिरा रहा है।"

ख़ान साहब कहते थे कि मौलवी इलाही बख़्श साहब ने ये शब्द ऐसे ढंग से कहे थे जिनमें कुछ एहसान का भाव पाया जाता था।

ख़ान साहब बयान करते थे कि दूसरे दिन जब मौलवी साहब और उनके साथी वापस जाने लगे तो हज़रत साहब से मिलने आए। मैं भी वहीं था। मैंने मौलवी साहब से पूछा, "कहिए मौलवी साहब! अब कोई एतराज़ तो बाकी नहीं रहा?"

मौलवी साहब ने कहा, "नहीं, मेरी तसल्ली हो गई है।"

मैंने कहा, "तो फिर बैअत?"

हज़रत साहब ने फरमाया, "ख़ान साहब! यह कहना आपका हक़ नहीं है। हमारा काम पहुँचा देना है। आगे मानना या न मानना उनका काम है।"

ख़ैर, वे वापस चले गए।

तीसरे-चौथे दिन हज़रत साहब क़ादियान आए और मैं भी आया तो हुज़ूर ने मुझे बुलाकर मुस्कुराते हुए अपने रूमाल से एक पोस्टकार्ड खोला और मेरी तरफ फेंककर फरमाया, "तहसीलदार साहब! आप जल्दी करते थे। लीजिए, उनका ख़त आ गया है।"

मैंने ख़त देखा तो वह मौलवी इलाही बख़्श साहब का था और पेंसिल से लिखा हुआ था, जो उन्होंने रास्ते में लखनऊ से भेजा था। उसमें उन्होंने लिखा था:

"मैंने रेल में बैठे हुए विचार किया कि अब जबकि मुझ पर हक़ खुल गया है तो अगर मैं रास्ते में ही मर जाऊँ तो ख़ुदा को क्या जवाब दूँगा। इसलिए मैं हुज़ूर के सिलसिले में दाख़िल होता हूँ। मेरी बैअत स्वीकार फरमाई जाए।"

हज़रत साहब ने फरमाया कि जब आदमी अलग होता है तो फिर उसे सोचने का अच्छा अवसर मिलता है और पिछली बातों पर विचार करके वह किसी नतीजे पर पहुँच सकता है।

{107} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

मौलवी सय्यद सरवर शाह साहब ने मुझसे बयान किया कि जिन दिनों गुरदासपुर में करम दीन के साथ मुक़दमा था और मजिस्ट्रेट ने तारीख़ डाल रखी थी तथा हज़रत साहब क़ादियान आए हुए थे, हुज़ूर ने तारीख़ से दो दिन पहले मुझे गुरदासपुर भेजा कि मैं जाकर वहाँ कुछ हवाले निकालकर तैयार रखूँ, क्योंकि अगली पेशी में हवाले पेश होने थे।

मेरे साथ शेख़ हामिद अली और अब्दुर्रहीम नाई बावर्ची को भी हुज़ूर ने गुरदासपुर भेज दिया।

जब हम गुरदासपुर मकान पर पहुँचे तो नीचे से डॉक्टर मुहम्मद इस्माईल ख़ान साहब मरहूम को आवाज़ दी कि वे नीचे आएँ और दरवाज़ा खोलें। डॉक्टर साहब उस समय मकान में ऊपर ठहरे हुए थे। हमारे आवाज़ देने पर डॉक्टर साहब बेचैनी के साथ रोने और चिल्लाने लगे। हमने कई आवाज़ें दीं, मगर वे उसी तरह रोते रहे। आखिर कुछ देर बाद वे आँसू पोंछते हुए नीचे आए।

हमने कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि मेरे पास मुहम्मद हुसैन मुंशी आया था।

मौलवी साहब कहते थे कि मुहम्मद हुसैन उक्त व्यक्ति गुरदासपुर में किसी कचहरी में मुंशी या पेशकार था और सिलसिले का सख़्त विरोधी था। वह मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के मिलने वालों में से था।

ख़ैर, डॉक्टर साहब ने बयान किया कि मुहम्मद हुसैन मुंशी आया और उसने मुझे कहा कि आजकल यहाँ आर्यों का जलसा हुआ है। कुछ आर्य अपने दोस्तों को भी जलसे में ले गए थे। इसी तरह मैं भी वहाँ चला गया।

जलसे की आम कार्रवाई के बाद उन्होंने ऐलान किया कि अब जलसे की कार्रवाई हो चुकी है, अब लोग चले जाएँ। हमें कुछ निजी बातें करनी हैं। इसलिए सभी बाहरी लोग उठ गए। मैं भी जाने लगा, मगर मेरे आर्य दोस्त ने कहा कि हम इकट्ठे चलेंगे। आप एक तरफ होकर बैठ जाएँ या बाहर इंतज़ार करें। इसलिए मैं वहाँ एक तरफ होकर बैठ गया।

फिर उन आर्यों में से एक व्यक्ति उठा और मजिस्ट्रेट को मिर्ज़ा साहब का नाम लेकर कहने लगा कि यह व्यक्ति हमारा सख़्त दुश्मन और हमारे नेता लेखराम का क़ातिल है। अब वह आपके हाथ में शिकार है और सारी क़ौम की नज़र आपकी तरफ है। अगर आपने इस शिकार को हाथ से जाने दिया तो आप क़ौम के दुश्मन होंगे। उसने इसी प्रकार की जोश दिलाने वाली बातें कीं।

इस पर मजिस्ट्रेट ने जवाब दिया कि मेरा तो पहले से ख़याल है कि अगर हो सके तो न केवल मिर्ज़ा को बल्कि इस मुक़दमे में जितने भी उसके साथी और गवाह हैं, सबको जहन्नम में पहुँचा दूँ। मगर क्या किया जाए कि मुक़दमा इतनी होशियारी से चलाया जा रहा है कि कोई हाथ डालने की जगह नहीं मिलती। लेकिन अब मैं अहद करता हूँ कि चाहे कुछ भी हो, पहली ही पेशी में न्यायिक कार्रवाई कर दूँगा।

मौलवी साहब कहते थे कि डॉक्टर साहब बयान करते थे कि मुहम्मद हुसैन मुझसे कहता था कि आप यह नहीं समझे होंगे कि न्यायिक कार्रवाई से क्या मतलब है। इसका मतलब यह है कि हर मजिस्ट्रेट को यह अधिकार होता है कि मुक़दमे की शुरुआत में या मुक़दमे के दौरान जब चाहे, अभियुक्त को बिना ज़मानत स्वीकार किए गिरफ्तार करके हवालात में दे दे।

मुहम्मद हुसैन ने कहा, "डॉक्टर साहब! आप जानते हैं कि मैं आपके सिलसिले का सख़्त विरोधी हूँ, मगर मुझमें यह बात है कि मैं किसी सम्मानित परिवार को ज़लील और बर्बाद होते, ख़ास तौर पर हिंदुओं के हाथ से ज़लील होते, नहीं देख सकता। और मैं जानता हूँ कि मिर्ज़ा साहब का परिवार ज़िले में सबसे अधिक सम्मानित है। इसलिए मैंने आपको यह ख़बर पहुँचा दी है कि आप इसका कोई इंतज़ाम कर लें।

"मेरे ख़याल में दो सुझाव हो सकते हैं। एक तो यह है कि चीफ़ कोर्ट लाहौर में

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad